॥ संतबानी ॥

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी थीं सो प्रायः ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या छेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ या फ़ुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भर सक तो पूरे ग्रंथ छापे गये हैं और फ़ुटकल शब्दों की हालत में सर्व-साधारन के उपकारक पद चुन लिये हैं, प्रायः कोई पुस्तक बिना दो लिपियों को मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फुट-नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा गया है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उन के वृत्तांत और कौतुक संक्षेप से फुट-नोट में लिख दिये गये हैं।

दो अंतिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात संतबानी संग्रह भाग १ [साखी] और भाग २ [शब्द] छप चुकीं जिन का नमूना देख कर महामहोपाध्याय श्री पंडित सुधाकर द्विवेदी बैकुंठ-बासी ने गद्गद होकर कहा था— "न भूतो न भविष्यति"।

अब कोई नई बानी किसी प्राचीन पुरुष की हमारे पास छपने को नहीं है सिवाय कबीर साहिब के विशेष पदों के जो उन की शब्दावली के नये छापे में बढ़ाये जा रहे हैं।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवें उन्हें हम को कृपा करके लिख भेजें जिस से वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारनों से इन पुस्तकों के छापने में बहुत ख़र्च होता है तौ भी सर्व-साधारन के उपकार हेतु दाम आध आना फ़ी आठ पृष्ठ (रायल) से अधिक नहीं रक्खा गया है।

प्रोप्रैटर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

सितम्बर सन् १९१५ ई०

इलाहाबाद।

दूसरे छापे की प्रस्तावना

सन् १९०७ ईसवी मेँ हम ने एक लिपि से पलटू साहिब की कुंडलियाँ थोड़े से अरिल छंद इत्यादि के साथ छापी थीँ और फिर कुछ रेख़्ते, झूलने और भजन मिले जिन्हेँ एक छोटी सी पुस्तक के रूप मेँ सन् १९०८ मेँ छापा परन्तु इन पदोँ की दूसरी लिपि न मिलने के कारन उन के मुक़ाबला और भली भाँति जाँच करने का मौक़ा न मिला, अपनी अल्प बुद्धि अनुसार दो पलटूपंथी साधुओँ से जहाँ तहाँ पूछ कर छाप दिया। हाल मेँ बाबा सरजूदासजी पलटूपंथी, पुराना कोपा ज़िला आज़मगढ़ के महंत से भेँट हुई और इन परोपकारी महात्मा ने कृपा करके हम को अपनी हस्त-लिखित पुस्तक पलटू साहिब की बानी की दी जिस से मिलान करके त्रुटियाँ जो पहिले छापे में रह गई थीँ ठीक की गईँ और बहुत सी नई मनोहर कुंडलियाँ, रेख़्ते, झूलने, अरिल छंद, कबित्त, सवैये और भजन के पद चुनने का भी अवसर मिला। यह सब पहिले छपे हुए पदोँ के साथ नये सिर से तीन भागोँ में इस क्रम से छापे जाते हैँ:—

भाग १—कुंडलिया।

भाग २—रेख़्ता, झूलना, अरिल, कवित्त और सवैया।

भाग ३—रागोँ के शब्द या भजन, और साखियाँ जो ठाकुर गंगाबख़्श सिंह ज़मींदार मौज़ा टँडवा ज़िला फ़ैज़ाबाद ने कृपा करके भेजीं।

इस सहायता के लिये हम महंत सरजूदासजी का मुख्य कर और ठाकुर गंगाबख़्शसिंह जी का धन्यवाद हृदय से देते हैं। महंतोँ मेँ हम को आज तक ऐसे कोई नहीं मिले थे जिन्होँ ने आप अपने पंथ के प्रचारक महात्मा का ग्रंथ स्वच्छ परोपकार के निमित्त बड़े उत्साह से छापने को दिया हो॥

इलाहाबाद
सन् १९१५

अधम
एडिटर संतबानी-पुस्तक माला।

सूची पत्र

पद

जीवन चरित्र।

महात्मा पलटूदासजी (पलटू साहिब) के जीवन-चरित्र के हम बहुत दिन से खोज में हैं परन्तु कहीं से पूरा हाल आज तक नहीं मिला यद्यपि कितने ही ग्रन्थ देखे गये और देश देशान्तर के साधुओं, विद्वानों और निज पलटूपंथी महन्तों से दरियाफ़्त किया गया। पलटूदासजी के सगे भाई और परम भक्त पलटूप्रसाद ने (जिन का संसारी नाम कुछ और ही था) अपनी "भजनावली" नामक पुस्तक में थोड़ा सा हाल लिखा है जिस से निश्चय होता है कि पलटू साहिब ने नगपुरजलालपुर गाँव में एक काँदू बनिया के कुल में जन्म लिया जिसे "भजनावली" में नंगाजलालपुर के नाम से लिखा है। यह गाँव फ़ैज़ाबाद के ज़िले में आज़मगढ़ की पच्छिम सीमा से मिला हुआ है नंगाजलालपुर नाम का कोई गाँव आज़मगढ़ या फ़ैज़ाबाद के ज़िले में नहीं है। यहीं उन के पुरोहित गोविंदजी महाराज रहते थे और दोनों ने बाबा जानकीदास नामक साधू से उपदेश लिया था, पर उन की शांति नहीं हुई इस लिये सार बस्तु की खोज में दोनों निकले। गोविंदजी जगन्नाथपुरी को जाते थे कि रास्ते में भीखा साहिब के दर्शन मिले जिन से गुप्त भेद प्राप्त हुआ। तब गोविंदजी पलटू साहिब के पास लौट कर आये और पलटू साहिब ने उन से सार बस्तु का उपदेश ले कर उन्हें गुरू धारन किया।

भजनावली के तीन दोहे यहाँ लिखे जाते हैं:—

नंगाजलालपुर जन्म भयो है, बसे अवध के खोर।
कहैं पलटूपरसाद हो, भयो जक्त में सोर॥
चार बरन को मेटि के, भक्ति चलाई मूल।
गुरु गोविंद के बाग में, पलटू फूले फूल॥
सहर जलालपुर मूड़ मुड़ाया, अवध तुड़ा करधनियाँ।
सहज करैं ब्योपार घट में, पलटू निर्गुन बनियाँ॥

पलटू साहिब उन्नीसवें शतक विक्रमीय में वर्त्तमान थे—अवध के नौवाब शुजाउद्दौला और हिन्दुस्तान के बादशाह शाह आलम इन के समकालीन थे जिन को हुए डेढ़सौ बरस का ज़माना बीता। यह महात्मा सदा गृहस्थ आश्रम में रहे और इन के वंश के लोग अब तक नगपुरजलालपुर के गाँव में मौजूद हैं।

पलटू साहिब बहुत काल तक फ़ैज़ाबाद के अयोध्या नगर में विराजमान थे जहाँ उन्हों ने अपना सतसंग खड़ा किया और अपने उपदेश से अनेक जीवों को चिताया। इसी स्थान पर उन्हों ने शरीर त्याग किया और वहाँ उनकी समाधि और संगत अब तक मौजूद हैं। और जगहों में भी इन महात्मा के अनुयाइयों की संगत हैं और पलटूपंथी साधू और गृहस्थ तो थोड़े बहुत भारतवर्ष के हर विभाग में पाये जाते हैं।

पलटू साहिब की प्रचंड महिमा और कीर्ति को देख कर अयोध्या और आस पास के अखाड़ों के वैरागियों के चित्त में बड़ी जलन और ईर्षा पैदा हुई जिसका इशारा पलटू साहिब ने अपनी बानी में भी जगह जगह पर किया है। कहते हैं कि यह ईर्षा इतनी बढ़ी कि इन दुष्टों ने गुट करके पलटू साहिब को जीते जी जला दिया परन्तु उसी समय और उसी देह से वह फिर जगन्नाथपुरी में प्रगट हुए और तत्काल ही फिर गुप्त हो गये। इस के प्रमाण में यह साखी दी हुई है:—

अवधपुरी में जरि मुए दुष्टन दिया जराय।
जगन्नाथ की गोद में पलटू सूते जाइ॥

इन के बहुत से चमत्कार और मोजज़े मुर्दों के जिलाने इत्यादि के प्रसिद्ध हैं जिन के यहाँ लिखने की आवश्यकता नहीं है।

इलाहाबाद
सितम्बर १९१५

अधम
एडिटर संतबानी-पुस्तक माला।

पलटू साहिब

भाग ३

शब्द

॥ गुरुदेव ॥

१

गगन कि धुनि जो आनई, सोई गुरु मेरा ।
वह मेरा सिरताज है, मैं वा का चेरा ॥ टेक ॥
सुन मैं नगर बसावई, सूतत मैं जागै ।
जल मैं अगिन छपावई, संग्रह मैं त्यागै ॥ १ ॥
जंत्र बिना जंत्री बजै, रसना बिनु गावै ।
सोहं सब्द अलापि कै, मन को समुझावै ॥ २ ॥
सुरति डोर अमृत भरै, जहँ कूप उरधमुख ।
उलटै कमल हि गगन मैं, तब मिलै परम सुख ॥ ३ ॥
भजन अखंडित लागई, जस तेल कि धारा ।
पलटुदास दंडौत करि, तेहि बारम्बारा ॥ ४ ॥

२

बूझि बिचारि गुरु कीजिये, जो कर्म से न्यारा ।
कर्म-बंध हरि दूरि है, बूड़हु मँझधारा ॥ टेक ॥
काम क्रोध जिन के नहीं, नाहिं भूख पियासा ।
लोभ मोह एकौ नहीं, नाहिं जग की आसा ॥ १ ॥

ज्यों कंचन त्यों काँच है, अस्तुति सो निन्दा।
सत्रु मित्र दोउ एक हैं, मुरदा नहिं जिन्दा ॥ २ ॥
जोग भोग जिनके नहीं, नहिं संग्रह त्यागी।
बंद मोष एको नहीं, सत सब्द के दागी ॥ ३ ॥
पाप पुन्य जिनके नहीं, नहिं गरमी पाला।
पलटू जीवन-मुक्त ते, साहिब के लाला ॥ ४ ॥

३

गुरु दरियाव नहाया है, ता की दुरमति भागी ॥ टेक ॥
गुरु दरियाव सदा जल निरमल, पैठत उपजै ज्ञाना है ॥१॥
अरसठ तीरथ गुरु के चरनन, सो मुख आपु बखाना है॥२॥
जब लग गुरु दरियाव न पावै, तब लग फिरै भुलाना है ॥३॥
पलटुदास हम बैठि नहाने, मिटिगा आना जाना है ॥४॥

४

चादर लेहु धुवाइ है, मन मैल भया है ॥ टेक ॥
सतगुरु पूरा धोबी पाया, सतसंगति सौंदाई है ॥ १ ॥
तिरगुन दाग पस्रो चादर मैं, मलि मलि दाग छुड़ाई है ॥२॥
आँच दिहिन बैराग कि भाठी, सरवन मनन घमाई[1] है ॥३॥
निरखि परखि कै चादर धोइनि, साबुन ज्ञान लगाई है ॥४॥
पलटूदास ओढ़ि चलु चादर, बहुरि न भवजल आई है ॥५॥

५

सकल तजि गुरु ही से ध्यान लगैहौं ॥ टेक ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस न पुजिहौं, ना मूरत चित लैहौं।
जो प्यारा मोरे घट माँ बसतु है, वाहो को माथ नवैहौं ॥१॥

(१) घाम या धूप मैं फैलाना।

ना कासी में करवत लैहौं, ना पचकोस में जैहौं ।
प्राग जाय तीरथ नहिं करिहौं, जगर न सीस कटैहौं ॥२॥
अजपा और अनाहू साधो, त्रिकुटी ध्यान न लैहौं ।
पदम आसन खींच न बैठौं, अनहद नाहिं बजैहौं ॥३॥
सबही जाप छोड़ि के साधो, गुरु का सुमिरन लैहौं ।
गुरु मूरत हिरदय में छाई, वाही से ध्यान लगैहौं ॥४॥
दुई खुदी हस्ती जब मेटे, निरंकार कहलैहौं ।
गगन भूमि में राज हमारो, अनलहक[1] धूम मचैहौं ॥५॥
पलटूदास प्रेम को बाजी, गुरु ही से दाँव लगैहौं ।
जीतौं तो मैं गुरु को पावौं, हारौं तो उनकी कहैहौं ॥६॥

॥ घट मठ ॥

६

साहिब आप बिराजै सकल घट, चारि खानि बिच राजै॥टेक
नारी पुरुष देव औ दानव, बाग फूल औ माली ।
हाथी घोड़ा बैल ऊँट में, कतहूँ रहै न खाली ॥ १ ॥
मच्छ कच्छ घरियार अचर चर, आग पवन औ पानी ।
तीतर बाज सिंह औ हरिना, पूरन चारिउ खानी ॥ २ ॥
ज्ञानी मूढ़ गुरू औ चेला, चोर साहु भरभूना[2] ।
बिस्वा बिसनी[3] भेड़ कसाई, नाहिं कोइ घर सूना ॥ ३ ॥
यह सरीर नासक[4] है भाई, जीव के नास न होई ।
पलटूदास जगत सब भूला, भेद न जानै कोई ॥ ४ ॥

(१) अहंब्रह्म । (२) भड़भूँजा । (३) ऐयाश, बिषई । (४) नाशमान ।

७

तो में है तेरा राम बैरागिन, भूलि गया तोहि धाम ॥टेक॥
घिव ज्यों रहै दूध के भीतर, मथे बिनु कैसे पावै।
फूल मँहै ज्यों बास रहतु है, जतन सेती अलगावै ॥१॥
मिँहदी मँहै रहै ज्यों लाली, काठ में अगिन छिपानी।
खोदे बिना नहीं कोइ पावै, ज्यों धरती में पानी ॥२॥
ऊख मँहै ज्यों कंद रहतु है, पेड़ रहै फल माहीं।
देस देसंतर ढुँढ़त फिरतु है, घट की सुधि है नाहीं ॥३॥
पूरन ब्रह्म रहै तोही में, क्यों तू फिरै उदासी।
पलटूदास उलटि कै ताकै, तूही है अबिनासी ॥४॥

८

क्यों तू फिरै भुलानी जोगिनि, पिय को मरम न जानी ॥टेक॥
अपने पिय को खोजन निकरी, है तू चतुर सयानी।
कंठ में माला खोजै बाहर, अजहूँ लै पहिचानी ॥१॥
मृग की नाभि मँहै कस्तूरी, वा को बास बसानी।
खोजत फिरै नहीं वह पावै, होस न करै अपानी ॥२॥
लरिका रहै बगल में तेरे, सहर ढोल दै छानी[1]।
खसम रहै पलना पर सूता, पिय पिय करै दिवानी ॥३॥
साचा सतगुरु खोजु जाय तू, दयावंत सत-ज्ञानी।
पलटूदास पिया पावैगी, लेहु बचन को मानी ॥४॥

(१) नगर भर घूम कर ढिंढोरा पीट रही है।

९

ऐसी कुदरति तेरी साहिब, ऐसी कुदरति तेरी है ॥टेक॥
धरती नभ दुइ भीत उठाया, तिस मैं घर इक छाया है।
तिस घर भीतर हाट लगाया, लेग तमासे आया है॥१॥
तीन लोक फुलवारी तेरी, फूलि रही बिनु माली है।
घट घट बैठा आपै सींचै, तिल भर कहीं न खाली है॥२॥
चारि खान औ भुवन चतुरदस, लख चौरासी बासा है।
आलम तोहि तोहि मैं आलम, ऐसा अजब तमासा है॥३॥
नटवा होइ कै बाजी लाया, आपुइ देखनहारा है।
पलटूदास कहौं मैं का से, ऐसा यार हमारा है ॥ ४ ॥

॥ सर्व-व्यापक ॥

१०

जगन्नाथ जगदीस, जग मैं व्यापि रहा ॥ टेक ॥
चारि खानि मैं लख चौरासी, और न कोइ दूजा।
आपुइ ठाकुर आपुइ सेवक, करत आपनी पूजा ॥ १ ॥
आपुइ दाता आपुइ मँगता, आपुइ जोगी भोगी।
आपुइ बिस्वा[1] आपुइ बिसनी[2] आपु बैद अप रोगी ॥२॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस आपुई, सुर नर मुनि होइ आया।
आपुहि ब्रह्म निरूपम गावै, आपुहि प्रेरत माया ॥ ३ ॥
आपुइ कारन आपुइ कारज, बिस्वरूप[3] दरसाया।
पलटूदास दृष्टि तब आवै, संत करै जब दाया ॥ ४ ॥

---

(१) कसबी। (२) भोगी। (३) संसार।

११

साहिब तुम सब के वाली,
तेरे बिनु कहूँ न खाली ॥ टेक ॥
सब घट तेरा नूर बिराजै,
कहूँ चमन कहुँ गुल कहुँ माली ॥ १ ॥
पलटू साहिब जुदा नहीं है,
मिँहदी के पात छिपी ज्योँ लाली ॥ २ ॥

॥ आरती ॥

१२

जै जै जै गुरु गोविन्द[1] आरती तुम्हारी ।
निरखत पद कंज कमल, कोटि पतित तारो ॥ टेक ॥
कोटि भानु उदै जा के, दीपक के वारी ।
छीर है समुद्र जा के, चरन का पखारो[2] ॥ १ ॥
लख चौरासी तीनि लोक, जा की फुलवारी ।
पुहुप लै कै का चढ़ावौँ, भँवर कै जुठारी ॥ २ ॥
बाल भोग कहा दीजै, द्वारे पदारथ चारी ।
कुबेरजी भंडारी जा के, देवी पनिहारी ॥ ३ ॥
सुन्न सिखर भवन जा के, तुरिया असवारी ।
आठ पहर बाजा बजै, सबद की झनकारी ॥ ४ ॥
काम क्रोध लोभ मोह, सतगुरु धै मारी ।
पलटुदास देखि लिया, तन मन धन वारी[3] ॥ ५ ॥

(१) पलटू साहिब के गुरू का नाम । (२) धोवन । (३) न्योछावर ।

१३

आरती कीजै संत चरन की,
यही उपाय न आन तरन की ॥ टेक ॥
संत को जस हरि सो मुख गावै,
संत कि रज ब्रह्मा नहिं पावै ॥ १ ॥
संत चरन बैकुंठ है लोचत,
संत चरन को तीरथ सोचत ॥ २ ॥
संत राम से अंतर नाहीं,
इक रस देखत दुऊ माहीं ॥ ३ ॥
लछमी है संतन की दासी,
रज[१] चाहत कैलास के बासी ॥ ४ ॥
कोटि मुक्ति संतन की चेरी,
पलटूदास मूल हम हेरी ॥ ५ ॥

१४

आरति राम गरीब-निवाजा,
तीनि लोक सब के सिरताजा ॥ टेक ॥
तुम्हरो पतित-पावनो बाना,
मैं तो पतित आपु सो जाना ॥ १ ॥
नाम तुम्हारो अधम-उधारा,
सब अधमन को मैं सिरदारा ॥ २ ॥
नाम तुम्हारो दीन-दयाला,
इहै जानि मैं लीन्हा माला ॥ ३ ॥

(१) चरन धूर।

सुनेउ अनाथन के तुम नाथा,
यह सुनि आइ पसारेउ हाथा ॥ ४ ॥
नाँव तुम्हारो अंतरजामी,
पलटुदास क्या कहै अपानी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ॥

१५

अरे मोरे सबद बिबेकी हंसा हो, बैठो सबद की डार ॥टेक
सबदै ओढ़ो सबद बिछाओ, सबदै भूख अहार ।
निसि दिन रहो सबद के घर मैं, सबदै गुरू हमार ॥१॥
लै हथियार सबद कै मारो, सबद खेल ठहराओ ।
कबहुँ कुचाल जो होइ तुम्हारी, सबद मैं भागि लुकाओ ॥२॥
आदि अनादि सबद है भाई, सबदै मूल बिचारा ।
जिन के चोट सबद को लागी, आवागवन निवारा ॥३॥
सबदै मूल है सबदै साखा, सबदै सबद समाना ।
पलटूदास जो सबद बिबेकी, सबद के हाथ बिकाना ॥४॥

१६

मुए सोई जीवते भाई, जिन्ह लगो सबद की चोट ॥टेक॥
उन को काऊ कुछ कहै, उन तजी है जक्त की लाज ।
वो सहज परायन होइ गये, उन सुफल किहा सब काज ॥१॥
उन को और न भावई, इक भावत है सतसंग ।
वो लोहा से कंचन भये, लगि पारस के परसंग ॥ २ ॥
जिन्ह ने सबद विचारिया, तिन्ह तुच्छ लगै संसार ।
वो आय पड़े सतसंग मैं, सब डारि दिहा सिर भार ॥३॥

सबद छुड़ावै राज को, फिरि सबदै करै फकीर ।
पलटूदास वो ना जियै, जिन्ह लगा सबद का तीर ॥४॥

॥ संत और साध ॥

१७

धन जननी जिन जाया है, सुत संत सखी री ॥ १ ॥
तन मन धन उन पै लै दीजे, सत्तनाम जिन पाया है ॥२
माया जा के निकट न आवै, तिरगुन दूर बहाया है ॥३॥
कंचन काच औ सत्रु मित्र को, भेद नहीं बिलगाया है ॥४
सहज समाधि अखंडित जा की, जग मिथ्या ठहराया है ॥५
पलटूदास सोई सुतवंती, संत को गोद खिलाया है ॥६॥

१८

संत सिपाही बाँके अवधू, फिरि पाछे नाहिं ताके ॥टेक॥
दिन दिन परै कदम आगे को, करैं मुलुक मैं साके[1] ।
हाँक देत हैं रन के ऊपर, रहैं प्रेम रस छाके ॥ १ ॥
कच्चा छीर नहीं वे पीवैं, पक्का छीर पिवैं वे मा के ।
आलम[2] डेरा देखि कै उन को, छोड़ैं सबद धड़ाके ॥ २ ॥
उन को भूख पियास न लागै, ज्यों खाये त्यों फाके ।
अस्तुति निन्दा दुष्ट मित्र को, एक राह मैं हाँके ॥ ३ ॥
काम क्रोध की गर्दन मारैं, दिल के बहुत फराखे[3] ।
पलटूदास फरक आलम से, वे असनाव[4] हैं का के ॥ ४ ॥

---

(१) अपना सम्वत या सन चलाना जो भारी कीर्त्ति का निशान है।
(२) सृष्टि । (३) उदार । (४) दोस्त, यार ।

१९

दिल को करहु फराख[१] फकीरा, रहु मुहासबे[२] पाक ॥टेक
जो आवै सो देहु लुटाई, क्या कौड़ी क्या लाख ।
खाहु खियावहु मगन रहौ तुम, सब से रहु बेबाक[३] ॥१॥
औरत जो दरसन को आवै, नजर से ताकहु पाक ।
सोना रूपा लाल जवाहिर, तुम्हरे लेखे खाक ॥ २ ॥
माया को चिरकीन[४] लखौ तुम, देखि कै मूँदौ नाक ।
जब आवै तब देहु चलाई, तनिक न रहियो ताक ॥३॥
संत चकोर की संग्रह नाहीं, संग्रह करै हलाक ।
पलटूदास कहौं मैं सब से, बार बार दै हाँक ॥ ४ ॥

॥ सतसंग ॥

२०

संतन संग अनन्द परम सुख ॥ टेक ॥
जेकरी संगति ज्ञान होत है, मिटत सकल दुख द्वंद ।
उनके निकट काल नहिं आवै, टूटि जात जम फंद ॥१॥
फूल संग से तेल बखानो[५], सब कोइ करत पसंद ।
पारस छुए लोह भा कंचन, दुरमति सकल हरंद[६] ॥२॥
हेलुवाई ज्यौं अवटि जारि कै, करत खाँड़ से कंद ।
पलटुदास यह बिनती मोरी, अजहुँ चेत मतिमंद ॥३॥

---

(१) उदार। (२) हिसाब किताब से। (३) लेखा ड्योढ़ा। (४) गंदगी। (५) महिमा हुई। (६) हर गई या दूर हुई।

२१

चतुरन से हम दूरि, कहत ऊधो से सो मुख ॥टेक॥
तीरथ बरत जोग जप तप मैं, मो से न भैंट सहै कितनौ दुख।
ज्ञान कथै बहु भेष बनावै, इहौ बात सब तुक्ख[1] ॥१॥
नेम अचार करै कोउ कितनौ, कबि कोबिद सब खुक्ख[2]।
निरदंडी सरबंगी नागा, मरै पियास औ भुक्ख[3] ॥२॥
तजि पाखंड करै सतसंगति, जहँ भजन मैं सुक्ख।
पलटूदास हरि कहि ऊधो से, सतसंगति मैं सुक्ख ॥३॥

२२

जिन पाया तिन पाया है, सतसंग सखो री ॥टेक॥
तीरथ बरत करै कोउ कितनौं, नाहक जनम गँवाया है॥१
जप तप जज्ञ करै कोउ कितनौं, फिरि फिरि गोता खाया है२
बेद पढ़ो पढ़ि पंडित मरिगा, फिरि चौरासी आया है ॥३॥
पलटूदास बात है सहजी, संतन भेद बताया है ॥४॥

॥ चितावनी ॥

२३

कहवाँ से जिव आये कहवाँ समाने हो साधो।
का देखि रहेउ भुलाय कहाँ लिपटाने हो साधो ॥१॥
निर्गुन से जिव आये सर्गुन समाने हो साधो।
भूलि गये हरि नाम माया लिपटाने हो साधो ॥२॥
जैसे तुरकी घोड़ खैंचि लट बागा हो साधो।
ऊँच सीस भये नीच चुगन लागे कागा हो साधो ॥३॥

---

(१) तुच्छ। (२) थोथा। (३) भूख।

आठ काठ कै पिंजरा दस दरवाजा हो साधो ।
कौनिक निकसा प्रान कौन दिसि भागा हो साधो ॥४॥
रोवत घर की नारि केस लट खोले हो साधो ।
आज मँदिर भयो सून कहाँ गये राजा हो साधो ॥५॥
आलहि[1] बाँस कटाइन डँडिया फँदाइन हो साधो ।
पाँच पचीस बराती लेइ सब धाये हो साधो ॥६॥
तीरे दिहिन उतारि सकल नहवावैं हो साधो ।
करि सोरहो सिंगार सबै जुरि आये हो साधो ॥७॥
आलहि चँदन कटाइन घेरि घर छाइन हो साधो ।
लोग कुटुम परिवार दिहिन पहुड़ाई[2] हो साधो ॥८॥
लाइ दिहिन मुख आगि काठ करि भारा हो साधो ।
पुत्र लिये कर बाँस सीस गहि मारा हो साधो ॥९॥
चहुँ दिसि पवन झकोरै तरवर डोलै हो साधो ।
सूझत वार न पार कौन दिसि जाना हो साधो ॥१०॥
हियवाँ नहिँ कोइ आपन जे से मैं बोलौँ हो साधो ।
जस पुरइनि[3] कर पात अकेला मैं डोलौँ हो साधो ॥११॥
बिष बोयौँ संसार अमृत कैसे पावौँ हो साधो ।
पुरब जनम कर पाप दोस केहि लावौँ हो साधो ॥१२॥
भौसागर की नदिया पार कैसे पावौँ हो साधो ।
गुरु बैठे मुख मोड़ि मैं केहि गोहरावौँ हो साधो ॥१३॥

(१) जल्दी । (२) लिटाया । (३) कोईं ।

जेहि वैरिन कर मूल ताहि हित मान्यो हो साधो ।
पलटुदास गुरु ज्ञान सुनत अलगान्यो हो साधो ॥१४॥

२४

लादि चला वंजारा है, कोउ संग न साथी ॥ टेक ॥
जाति कुटुम सब रुदन[1] करत हैं, फेरि वैठि मुख दारा[2] है ॥१॥
छुटिगे वरदी लुटिगे टाँडा, निकरि गया वह प्यारा है ॥२॥
वैठे काग सून भा मंदिल, कोई नहीं रखवारा है ॥३॥
पलटूदास तजो मृगतृस्ना, झूठा सकल पसारा है ॥४॥

२५

भजि लीजे हरि नाम, काम सकल तजि दीजै ॥ टेक ॥
मातु पिता सुत नारि बांधवा, आवै ना कोउ कामा ।
हाथी घोड़ा मुलुक खजाना, छुटि जैहैं धन धामा ॥१॥
जब तुम आया मूठी बाँधे, हाथ पसारे जाना ।
सूखा हाथ जगत की माया, ताहि देखि ललचाना ॥२॥
नर तन सुभग भजन के लायक, कौड़ी हाट बिकाना ।
हरिगा ज्ञान परा कुसंगति, अमृत में विष साना ॥३॥
एक न भूला दुइ ना भूला, भूला सब संसारा ।
पलटुदास हम कहा पुकारी, अब ना दोस हमारा ॥४॥

२६

वृद्ध भये तन खासा, अब कब भजन करहुगे ॥ टेक ॥
बालापन बालक सँग बीता, तरुन भये अभिमाना ।
नख सिख सेती भई सपेदी, हरि का मरम न जाना ॥१॥

(१) विलाप । (२) स्त्री ।

तिरिमिरि बहिर नासिका चूवै, साक[१] गरे चढ़ि आई ।
सुत दारा गरियावन लागे, यह वुढ़वा मरि जाई ॥२॥
तीरथ बर्त एकौ नहिं कीन्हा, नहीं साधु को सेवा ।
तीनिउ पन धोखे में बीते, ऐसे मूरुख देवा ॥३॥
पकरा आइ काल ने चोटी, सिर धुनि धुनि पछिताता ।
पलटूदास कोऊ नहिं संगी, जम के हाथ बिकाता ॥४॥

२७

भजन करु मूरख कहँ भटकै रे ॥ टेक ॥
यह संसार माया कै लासा,
छुटै नाहिँ जो सिर पटकै रे ॥१॥
माया मोह रैन का सपना,
झूठे माहिँ कहा अटकै रे ॥२॥
भरा घट घड़ा हरि नाम अमी है,
जग चहला मैं लपटै रे ॥३॥
मिलु सतगुरु तोहि नाम पिलावै,
जावै तपनि जुगन जुग कै रे ॥४॥
नहिं डेरात जम बाँधि के ठगिहैं,
ऊपर गोड़ नरक लटकै रे ॥५॥

२८

पाती आई मोरे पीतम की, साईं तुरत बुलायो हो ॥टेक॥
इक अँधियारी कोठरी, दूजे दिया न बाती ।
बाँह पकरि जम ले चले, कोइ संग न साथी ॥ १ ॥

(१) दंमा ।

सावन की अँधियारिया, भादौं निज राती ।
चौमुख पवन झकोरही, धड़कै मोरि छाती ॥ २ ॥
चलना तो हमैं जरूर है, रहना यहँ नाहीं ।
का लैके मिलब हजूर से, गाँठी कछु नाहीं ॥ ३ ॥
पलटुदास जग आय के, नैनन भरि रोया ।
जीवन जनम गँवाय के, आपै से खोया ॥ ४ ॥

२६

घरिय पहर मैं कूच तुम्हारा,
मन तुम भयो अनारी हो ॥१॥
केहि कारन धन धाम सँवारहु,
नाहक करहु बेगारी हो ॥२॥
जम राजा से का तुम कहिहो,
पूछै दै दै गारी हो ॥३॥
घर की नारि फेरि मुँह बैठी,
बड़ी रही हितकारी हो ॥४॥
गाँठी दाम राह ना पैंड़ा,
बूड़ि मुए मँझ धारी हो ॥५॥
पलटुदास संतन बलिहारी,
हम को पार उतारी हो ॥६॥

३०

कै दिन का तोरा जियना रे, नर चेतु गँवार ॥टेक॥
काची माटि कै घैला[1] हो, फूटत नहिँ बेर ।
पानी बीच बतासा हो, लागै गलत न देर ॥ १ ॥

(१) घड़ा ।

धूआँ कै धौरेहर हो, बारू के भीत ।
पवन लगे झरि जैहै हो, तृन ऊपर सीत ॥ २ ॥
जस कागद कै कलई हो, पाका फल डार ।
सपने के सुख संपति हो, ऐसो संसार ॥ ३ ॥
घने बाँस का पिंजरा हो, तेहि बिच दस द्वार ।
पंछी पवन बसेरू हो, लावै उड़त न बार ॥ ४ ॥
आतसबाजी यह तन हो, हाथे काल के आग ।
पलटुदास उड़ि जैबहु हो, जब देइहि दाग ॥ ५ ॥

३१

काल बली सिर ऊपर हो, तीतर काँ बाज ।
चंगुल तर चिचियैहौ हो, तब मिलि हैं मिजाज ॥ १ ॥
भजन बिना का नर तन हो, रैयत बिनु राज ।
बिना पिता का बालक हो, रोवै बिनु साज ॥ २ ॥
देव रु पितर उपासक हो, परिहै जम गाज[1] ।
बहुत पुरुष के नारी हो, बिस्वा नहिँ लाज ॥ ३ ॥
काम क्रोध बिनु मारे हो, का दिहे सिर ताज ।
पलटुदास धृग जीवन हो, सब झूठ समाज ॥ ४ ॥

३२

मेरे मनुआँ रे तुम तौ निपट अनारी ॥ टेक ॥
कौड़ी कौड़ी लाख बटोरेहु, नाहक किहेहु बेगारी ।
तहु चढ़ि चलेहु चारि के काँधे, दूनोँ हाथ पसारी ॥१॥

(१) बिजली ।

बहुरि बहुरि कै राँध परोसी, आये मूड़ फेकारी[1]।
जाति कुटुँब सब रोवन लागे, सँग लागि बूढ़ि महतारी ॥२
तुहरे संग कोऊ नहिँ जाई, कोठा महल अटारी।
अपने स्वारथ को सब रोवै, झूठ मूठ कै आ री ॥ ३ ॥
धरमराय जब लेखा मँगिहै, करबेहु कौन बिचारी।
पलटू कहत सुनो भाइ साधो, इतनी अरज हमारी ॥४॥

३३

पानी बीच बतासा साधो तन का यही तमासा है ॥ टेक ॥
मुट्ठी बाँधे आया बंदा, हाथ पसारे जाता है।
ना कुछ लाया न ले जायगा, नाहक क्यौँ पछिताता है ॥१
जोरू कौन खसम है किसका, कैसा तेरा नाता है।
पड़ा बेहोस होस कर बंदे, बिषय लहर मेँ माता है ॥२॥
ज्यौँ ज्यौँ बंदे तेरी पलक परत है, त्यौँ त्यौँ दिन नगिचाता है।
नेकी बदी तेरे संग चलेगी, और सब झूठी बाता है ॥ ३ ॥
प्रान तुम्हारे पाहुन बंदे, क्यौँ रिस किये कुँहाता[2] है।
पलटूदास बंदगी चूके, बंदा ठोकर खाता है ॥ ४ ॥

॥ बैराग ॥

३४

जनि कोइ होवै बैरागी हो बैराग कठिन है ॥ टेक ॥
जग की आसा करै न कबहूँ, पानी पिवै ना माँगी हो।
भूख पियास छुटै जब निन्द्रा, जियत मरै तन त्यागी हो ॥१

(१) सिर खोले। (२) रूठता।

जा के धर पर सीस न होवै, रहै प्रेम लौ लागी हो।
पलटुदास बैराग कठिन है, दाग दाग पर दागी हो ॥२

॥ बिरह ॥

३५

जेकरे अँगने नौरँगिया, सो कैसे सोवै हो।
लहर लहर बहु होय, सबद सुनि रोवै हो ॥ १ ॥
जेकर पिय परदेस, नींद नहिं आवै हो।
चौंकि चौंकि उठै जागि, सेज नहिं भावै हो ॥ २ ॥
रैन दिवस मारै बान, पपीहा बोलै हो।
पिय पिय लावै सोर, सवति होइ डोलै हो ॥ ३ ॥
बिरहिनि रहै अकेल, सो कैसे कै जीवै हो।
जेकरे अमी कै चाह, जहर कस पीवै हो ॥ ४ ॥
अभरन देहु बहाय, बसन धै फारौ हो।
पिय बिनु कौन सिंगार, सीस दै मारौ हो ॥ ५ ॥
भूख न लागै नींद, बिरह हिये करकै हो।
माँग सेँदुर मसि पोछ[1] नैन जल ढरकै हो ॥ ६ ॥
केकहैं करै सिंगार, सो काहि दिखावै हो।
जेकर पिय परदेस, सो काहि रिझावै हो ॥ ७ ॥
रहै चरन चित लाइ, सोई धन आगर हो।
पलटुदास कै सबद, बिरह कै सागर हो ॥ ८ ॥

---

(१) माँग का सेँदुर और आँख का काजल दोनों पोछ डाले जायँ।

३६

जा के लगी सोई तन जानै,
दूजो कवन हाल पहिचानै ॥ टेक ॥
है कोइ भेदी भेद बतावै,
कैसे बिरहिनि दिवस गँवावै ॥ १ ॥
मारग दूर पथिक सब हारे,
उतरन को भवसागर पारे ॥ २ ॥
उकठा पेड़ सींचै जो माली,
घायल फिरौँ भई मतवाली[1] ॥ ३ ॥
एक तो लागी प्रेम की गाँसी,
दूजे सहैाँ जक्त उपहासी ॥ ४ ॥
लागी लगन टरै नहिँ टारे,
क्या करै औषद बैद बेचारे ॥ ५ ॥
पलटूदास लगी तन मेरे,
घायल फिरैँ और बहुतेरे ॥ ६ ॥

३७

मेरे लगी सबद की गाँसी है, तब से मैँ फिरौँ उदासी है ॥ टेक
नैनन नीर ढुरन मोरे लागे, परी प्रेम की फाँसी है ॥१
भूषन बसन नहीँ मोहिँ भावै, छोड़ा भोग बिलासी है ॥२
मन भया छीन दीन हुई सब से, अबला नाम पियासी है ॥३

(१) अगर माली जड़ से सूखे पेड़ को सींच कर हरा कर सकता हो तो मुझ घायल मतवाली की दशा भी सुधारना मुमकिन है।

चारिउ खूँट कानन गिरि[1] खोजा, खोजा मथुरा कासी है ॥४
जा से पूछौं कोउ न बतावै, और करै उपहासी है ॥५॥
पलटुदास हम खोजि निकारा, है बैरागिनि खासी है ॥६

२८

पिया पिया बोलै पपीहा है,
सबद सुनत फाटै हीया है॥ टेक ॥
सोवत से मैं चौंकि परी हौं ।
धकर धकर करै जीया है ॥ १ ॥
पिय की सोच परी अब मो को ।
पिय बिनु जीवन छीया है ॥ २ ॥
बैरी होइ के आय पपीहा ।
बिरह जँजाल मोहिं दीया है ॥ ३ ॥
हित मेरा यह बड़ा पपीहा ।
उपदेस आइ मोहिं कीया है ॥ ४ ॥
पलटुदास पपिहा की दौलत[2] ।
बैराग जाइ हम लीया है ॥ ५ ॥

२६

साहिब के घर बिच जावोँगी ।
जावौंगी सुख पावोँगी ॥ टेक ॥
प्रेम भभूत लगाय के सजनी ।
संतन कँहै रिझावोँगी ॥ १ ॥
अचरा फारि करौं मैं कफनी ।
सेल्ही सुरति बनावोँगी ॥ २ ॥

(१) वन और पहाड़ । (२) बदौलत ।

धूनी ध्यान अकास में दैहौं ।
नाम को अमल चढ़ावौंगी ॥ ३ ॥
पलटूदास मारि कै गोता ।
भक्ति अभय लै आवौंगी ॥ ४ ॥

४०

अब तो मैं बैराग भरी ।
सोवत से मैं जागि परी ॥ १ ॥
नैन बने गिर के झरना ज्यों ।
मुख से निकरै हरी हरी ॥ २ ॥
अभरन तोरि बसन धै फारौं ।
पापी जिउ नहिं जात मरी ॥ ३ ॥
लेउँ उसास सीस दै मारौं ।
अगिनि बिना मैं जाउँ जरी ॥ ४ ॥
नागिनि बिरह डसत है मो को ।
जात न मो से धीर धरी ॥ ५ ॥
सतगुरु आइ किहिन बैदाई ।
सिर पर जादू तुरत करी ॥ ६ ॥
पलटूदास दिहा उन मो को ।
नाम सजीवन मूल जड़ी ॥ ७ ॥

४१

साहिब से लागी री सजनी ।
मेरो ब्याह भयो बिन मँगनी ॥ १ ॥

लागि गई तब लाज कहाँ की ।
कल न परै निसु रजनी ॥ २ ॥
ना नैहर ना सासुर की मैं ।
सहज लगी कछु लगनी ॥ ३ ॥
जब हम रहे पिया तब नाहीं ।
बूझौ बात बैरगनी ॥ ४ ॥
ज्ञान में सोवौं मोह में जागौं ।
नहिं सोवैं नहिं जगनी ॥ ५ ॥
भूख नाहिं रहौं खाये बिनु ।
नहिं संग्रह नहिं त्यगनी ॥ ६ ॥
पलटूदास चलैं नहिं बैठैं ।
नहीं भजन नहिं भजनी ॥ ७ ॥

४२

प्रेम बान जोगी मारल हो, कसकै हिया मोर ॥ टेक ॥
जोगिया के लालि लालि अँखियाँ हो, जस कँवल के फूल ।
हमरी सुरुख चुनरिया हो, दूनौं भये तूल[1] ॥ १ ॥
जोगिया के लेउँ मिर्गछलवा हो, आपन पट चीर ।
दूनौं कै सियब गुदरिया[2] हो, होइ जाब फकीर ॥ २ ॥
गगना में सिंगिया बजाइन्हि हो, ताकिन्हि मोरी ओर ।
चितवन में मन हरि लियो हो, जोगिया बड़ चोर ॥ ३ ॥

---

(१) तुल्य=बराबर । (२) एक लिपि में "कै सियब गुदरिया" की जगह "करब गठिजोरवा" है ।

गंग जमुन के विचवाँ हो, वहै भिरहिर नोर ।
तेहि ठैयाँ जोरल सनेहिया हो, हरि लै गयो पीर ॥४॥
जोगिया अमर मरै नहिं हो, पुजवल मोरी आस ।
करम लिखा बर पावल हो, गावै पलटूदास ॥ ५ ॥

४३

पिय से मान न कीजै रजनी[1],
सजनी हठ तजि दीजै ।
जो तू पिय को चाहै प्यारी,
सतसंगति भजि लीजै ॥
पलटुदास तन मन धन दै कै,
प्रेम पियाला पीजै ॥

४४

रटौं मैं राम को बैठी, पड़े हैं जीभ मैं छाला ।
थके दृग पंथ को जोहत[2], जपौं मैं प्रेम का माला ॥१॥
कुसल जब पीव को देखौं, देखे बिनु नाहिं जीवौंगी ।
खेलौंगी जान पर अपने, पियाला जहर पिवौंगी ॥ २ ॥
बिरह की आग है लागी, मुझे कुछ और ना सूझै ।
सजन वह बड़ा बेदरदी, हमारी दरद ना बूझै ॥ ३ ॥
दीपक को भावता नाहीं, पतँग तन जारि भया राखी ।
पलटूदास जिय मेरा, तुम्हारे बीच है साखी ॥ ४ ॥

(१) रात । (२) रस्ता निहारते ।

४५

अरे दैया हमरे पिया परदेसी ॥ टेक ॥

इक तो मैं पिय की बिरह बियोगिनि,

मो कँह कछु न सुहाई ।

दुसरे सासु ननद मारै बोली,

छतिया मोरि फाटि जाई ॥ १ ॥

चुइ चुइ आँसु भींजि मोर अँचरा,

भींजि गई तन सारी ।

भूख न भोजन नींद न आवै,

झुकि झुकि उठौं सम्हारी ॥ २ ॥

अपने पियहिं पाती लिखि पठइउँ,

मरम न जानै काऊ ।

उमगे जोबन राखि न जाई,

तुम थाती[1] लै जाऊ ॥ ३ ॥

बारी[2] रहिउँ भइउँ तरुनापा[3],

सेत भये तन केसा ।

पलटूदास पिया नहिँ आये,

तब हम गइनि बिदेसा ॥ ४ ॥

॥ प्रेम ॥

४६

घूँघट को पट खोलौंगी ।

जोगिन ह्वै के डोलौंगी ॥ १ ॥

---

(१) अमानत । (२) छोटी । (३) जवान ।

लोक लाज कुल कानि छोड़ि कै ।
हँसि हँसि बातैं बोलैंगी ॥ २ ॥
का रिसियाइ करै कोइ मेरा ।
जग से नाता तोरैंगी ॥ ३ ॥
ज्ञान कि ढोल बजाय रैन दिन ।
गगन रखाना[1] फोरौंगी ॥ ४ ॥
पलटूदास भई मतवारी ।
प्रेम पियाला घोरौंगी ॥ ५ ॥

४७

सतगुरु से लागी नेही है,
बात बहुत यह मेहीं[2] है ॥ टेक ॥
परदा काह खसम से कीजै,
जिन देखा सब देंही है ॥ १ ॥
भूलि परी मैं जग के बीचे,
बाँह पकरि लिहा तेही है ॥ २ ॥
दीनदयाल पतित के पावन,
जन सरनागति लेही है ॥ ३ ॥
पलटूदास धन्य इक सतगुरु,
और बात सब येही है ॥ ४ ॥

४८

जल औ मीन समान, गुरु से प्रीति जो कीजै ॥ टेक ॥
जल से बिछुरै तनिक एक जो, छोड़ि देत है प्रान ॥ १ ॥

(१) मोका । (२) बारीक ।

मीन कँहै लै छीर मैं राखै, जल बिनु है हैरान ॥ २ ॥
जो कछु है सो मीन के जल है, जल के हाथ बिकान ॥३॥
पलटूदास प्रीति करै ऐसी, प्रीति सोई परमान ॥ ४ ॥

४६

प्रेम दिवाना मन यार,
गुरु के हाथ बिकाना ॥ टेक ॥
निसु दिन लहर उठत अभि अंतर,
बिसरा पियना खाना ॥ १ ॥
गगन गुफा मैं कुंजगली है,
तेहि मैं जाइ समाना ॥ २ ॥
सहस कमल दल मानसरोवर,
तेहि बिच भँवर लुभाना ॥ ३ ॥
पलटूदास अमल बिनु अमली,
आठ पहर मस्ताना ॥ ४ ॥

५०

जानी जानी पिया हो,
तुमको पहिचानी ॥ टेक ॥
जब हम रहलो बारी भोली,
तुम्हरो मरम न जानी ।
अब तो भागि जाहु पिया हम से,
तब हम मरद बखानी ॥ १ ॥
बहुत दिनन पर भैंट भई है,
फाग खेलन हम ठानी ।

तन सम्बत लै खाक मिली धन,
तजि कै मान गुमानी ॥ २ ॥
इँगला पिँगला सुखमन खेलै,
अजपा सखी सयानी ।
तुरिया नाँघि चली घर अपने,
झझकि झझकि झझकानी ॥ ३ ॥
प्रेम के रँग अबीर भरि थारी,
जोति मेँ जोति समानी ।
पलटू जीते हारि चले पिय,
ना कछु लाभ न हानी ॥ ४ ॥

५१

जो पिय के मन मानी रे,
सोइ नारि सयानी ॥ टेक ॥
पीतम हमरे पाती पठाई,
देखि देखि मुसुकानी ।
बाँचत पाती जुड़ानी छाती,
आपु मेँ उलटि समानी ॥ १ ॥
भूषन भोजन नीँद न भावै,
देखत रूप अघानी ।
लोग कहैँ सखि लाज करो तुम,
हम चेतन है बौरानी ॥ २ ॥

रंग महल मैं जाइ के बैठी,
ऋतु बसंत जहँ आनी ।
सुखमन गावै भाव बतावै,
देखि नाच हरखानी ॥ ३ ॥
पलटुदास असमान फोरि कै,
सबद की करै बखानी ।
पुतरी लोन कि सिंधु समानी,
उलटि कहै को बानी ॥ ४ ॥

५२

पिया है प्रेम का प्याला ।
हुआ मन मस्त मतवाला ॥ १ ॥
भया दिल होस से भाई ।
बेहोसी जगत बिसराई ॥ २ ॥
बिंद मैं नाद का मेला ।
उलटि के खेल यह खेला ॥ ३ ॥
जोग तजि जुक्ति को पाई ।
जुक्ति तजि रूप दरसाई ॥ ४ ॥
रूप तजि आपु को देखा ।
आपु मैं पवन की रेखा ॥ ५ ॥
उसी की गिरह संसारा ।
पलटूदास है न्यारा ॥ ६ ॥

५३

हरि रस छकि मतवाला है,
वा के लगी है खुमारी ॥ टेक ॥
सात सरग की बात बतावै ।
देखत के वह बाला[1] है ॥ १ ॥
तीन लोक की एक चाल है ।
वा की उलटी चाला है ॥ २ ॥
नहिं मुद्रा नहिं भेष बनावै ।
जपता अजपा माला है ॥ ३ ॥
ज्ञान मँहै उनमत्त रहतु है ।
भूला जग जंजाला है ॥ ४ ॥
भूख पियास नहीं कछु वा के ।
लगै न गरमी पाला है ॥ ५ ॥
पलटुदास जिन हरि रस चाखा ।
पिये न दूजा प्याला है ॥ ६ ॥

५४

संतन सँग निसि दिन जागौंगी,
जागौंगी सँग लागौंगी ॥ टेक ॥
तन मन धन न्योछावर करि कै ।
पुलकि पुलकि चित पागौंगी ॥ १ ॥
सयन[2] करत के पाँव दाबिहौं ।
भक्ति दान बर माँगौंगी ॥ २ ॥

(१) लड़का, कम-उमर । (२) नींद ।

सीत प्रसाद पेट भरि खैहौँ ।
चौरासी घर त्यागौँगी ॥ ३ ॥
पलटुदास जो दाग करम को ।
उलटि दाग फिर दागौँगी ॥ ४ ॥

५५

सतगुरु को घर लै आवौँगो,
फूलन सेज बिछावौँगो ॥ टेक ॥
सरगुन दरि कै दाल बनैहौँ ।
निरगुन भात रिन्हावौँगो ॥ १ ॥
प्रेम प्रीति कै चौक पुरैहौँ ।
सबद कै कलस धरावौँगी ॥ २ ॥
रतन जड़ित की चौकी पर लै ।
सतगुरु को बैठावौँगो ॥ ३ ॥
ज्ञान कै थार सुमति कै झारी ।
सतगुरु कँहै जँवावौँगो ॥ ४ ॥
तत्तु गारि कै अतर लगावौँ ।
त्रिकुटी मँह पौढ़ावौँगी ॥ ५ ॥
पलटुदास सोवन लगे सतगुरु ।
सुखमन बेनियाँ डोलावौँगी ॥ ६ ॥

५६

मैं जानौं पिय मोर,
  पिया नहिँ आपन सजनी ॥ टेक ॥
पिय मोर चंद चकोर भये हम,
  आग चुनत तन तजनी ॥ १ ॥
हम धन कमल पिया मोर सूरुज,
  गगन देखि मुख गजनी ॥ २ ॥
मैं पतंग पिय दीपक मोरा,
  अनचाहत सँग भजनी ॥ ३ ॥
पलटूदास जाहि तन लागी,
  कल न परै दिन रजनी ॥ ४ ॥

५७

सैयाँ के बचन गड़ि गे मोरे हिय में ॥ टेक ॥
गगन महल पिय मोहिँ गुहराइन्हि,
  सबद स्रवन सुनि कल नहिँ जिय में ॥ १ ॥
भेद भरी तन के सुधि नाहीं,
  यह मन जाइ बसा मोरे पिय में ॥ २ ॥
खोजत खोजत हारि रह्यो है,
  मथि मथि छाछ निकारै जस घिय में ॥ ३ ॥
पलटुदास के गोबिंद साहिब,
  आइ मिले मोहिँ प्रेम गलिय में ॥ ४ ॥

५८

हम भजनीक मेँ नाहीँ अवधू,
    आँखि मूँदि नहिँ जाहीँ ॥ टेक ॥
इक भजनीक भजन है इक ठो,
    तब वह भजन में जावै ।
भजनी भजन एक भा दूनोँ,
    वा के भजन न आवै ॥ १ ॥
खसम की मजा परी है जिन को,
    सो क्या नैहर आवै ।
हुमा[1] पच्छी रहै गगन मेँ,
    वा के जगत न भावै ॥ २ ॥
बुंद परा सागर के माहीँ,
    वह ना बुंद कहावै ।
लोन की डेरी[2] परी पानी मेँ,
    कहवाँ से फिरि पावै ॥ ३ ॥
तेल कि धार लगी निसि बासर,
    जोति मेँ जोति समानी ।
पलटूदास जो आवै जावै,
    सो चैाथाई ज्ञानी ॥ ४ ॥

---

(१) स्वर्ग की एक चिड़िया जिस की छाया पड़ने से आदमी बादशाह हो जाता है। (२) डली।

५९

रँगि ले रंग करारी है,
फिर छुटै न धोये ॥ टेक ॥
ज्ञान को माट ताहि बिच बोरो,
मन बुधि चित रँग डारी है ॥ १ ॥
तन मन धन सब देइ रँगाई,
रंग मजीठी[1] भारी है ॥ २ ॥
रंग बहुत यह सोखि लेइगी,
बहुत दिनन की सारी है ॥ ३ ॥
सतसंगति में बैठि रँगावै,
सोइ पतिब्रता नारी है ॥ ४ ॥
पलटूदास पहिरि के निकरै,
अपने पिय की प्यारी है ॥ ५ ॥

६०

गाँठि परी पिय बोले न हम से ॥ टेक ॥
निसि दिन जागौं मैं पिय की सेजिया ।
नैना अलसाने निकरि गे घर से ॥ १ ॥
जो मैं जनतिउँ पिय रिसियैहैं ।
काहे को प्रीति लगौतिउँ अस ठग से ॥ २ ॥
अपने पिय को मैं बेगि मनैहौं ।
सो तकसीर होत प्रभु जन से ॥ ३ ॥

(१) पक्का लाल रंग।

सुनि मृदु बचन पिया मुसुकाने ।
पलटुदास पिय मिले बड़े तप से ॥ ४ ॥

६१

राम तो हितकारी मेरे, और न कोई आस है ॥ टेक ॥
जब से दरस दीन्हा, प्रान उन हर लीन्हा ।
तन की बिसरी सुधि, सही जक्त उपहास है ॥ १ ॥
प्रेम की फाँसी बाझी, जक्त की लाज त्यागी ।
उठी अकुलाय माने, सोवत से जाग है ॥ २ ॥
कहत है पलटूदास, तजहु सकल आस ।
एक ही भरोसा राखो, एक ही बिस्वास है ॥ ३ ॥

६२

मेरो मन जोगियैं हर लीन्हा,
ना जानौं क्या कीन्हा ॥ टेक ॥
तन मन की सुधि रही न एको,
परी प्रेम की फाँसी ।
यहि जोगिया के कारन माई,
सहौं जगत उपहासी ॥ १ ॥
भूख न लागै नींद न आवै,
छुटा अन्न औ पानी ।
यहि जोगिया की अजब सुरति पर,
देखत भइउँ दिवानी ॥ २ ॥

जब से दृष्टि परी जोगी पर,
कल न परै दिन राती ।
यहि जोगिया के कारन माई,
जरौं तेल बिनु बाती ॥ ३ ॥
प्रान करौं न्योछावर जोगी पर,
लोक लाज मैं त्यागा ।
पलटूदास कहौं मैं का से,
ये जोगियै मन लागा ॥ ४ ॥

॥ विश्वास ॥

६३

मैं जग की बात न मानौंगी ।
ठान आपनी ठानौंगी ॥ १ ॥
कहे सुने से खाँड़ आपनी ।
नाहिं धूरि में सानौंगी ॥ २ ॥
कहे सुने से हीरा आपनो ।
नाहिं काँच मैं आनौंगी ॥ ३ ॥
जग की ओर तनिक नाहिं ताकौं ।
सतसंगति पहिचानौंगी ॥ ४ ॥
पलटूदास कहे से का भा ।
जो जानौं सो जानौंगी ॥ ५ ॥

॥ सूरमा ॥

६४

समुझि बूझि रन चढ़ना साधो,
खूब लड़ाई लड़ना है ॥ टेक ॥
दम दम कदम पड़ै आगे को,
पीछे नाहिं पछड़ना है ।

तिल तिल घाव लगै जो तन मैं,
खेत सेती क्या टरना है ॥ १ ॥
सबद खैंचि समसेर[1] जेर कर,
उन पाँचो को धरना है।
काम क्रोध मद लोभ कैद कर,
मन कर ठौरे मरना है ॥ २ ॥
खड़ा रहै मैदान के ऊपर,
उन की चोट सँभरना है।
आठ पहर असवार सुरत पर,
गाफ़िल नाहीं पड़ना है ॥ ३ ॥
सीस दिहा साहिब के ऊपर,
किस की डेर अब डेरना है।
पलटू बाना रुंड[2] के ऊपर,
अब क्या दूसर करना है ॥ ४ ॥

६५

सो रजपूत जा को काया कोट ॥ टेक ॥
काम क्रोध मन मैं मउवास[3]।
इन दुष्टन को देइ निकास ॥ १ ॥
पाँच सिपाह जगीरीदार।
नित उठि मन से करते रार ॥ २ ॥
इन पाँचो को डारो मार।
गढ़ भीतर तुमहीं सरदार ॥ ३ ॥

(१) तलवार। (२) धड़। (३) चोर।

लोभ मोह यह करिहैँ चोट ।
जौँ लगि पैहैँ तिल भर ओट ॥ ४ ॥

पलटूदास सोई रजपूत ।
मन के मारि कै होइ सपूत ॥ ५ ॥

॥ उपदेश ॥

६६

बनत बनत बनि जाइ, पड़ा रहै संत के द्वारे ॥ टेक ॥
तन मन धन सब अरपन कै कै, धक्का धनी के खाय ॥१॥
मुरदा होय टरै नहिँ टारे, लाख कहै समुझाय ॥२॥
स्वान विरित पावै सोइ खावै, रहै चरन लौ लाय ॥३॥
पलटूदास काम बनि जावै, इतने पर ठहराय ॥४॥

६७

हाट लगी है दाया की कोइ करैगा सौदा ॥ टेक ॥
लादै के जस लादेन्हि अपजस,
परि गइ फाँसी माया की ॥ १ ॥
नफा के आएन्हि मूर गँवाएन्हि,
माल जगातिन[1] खाया की ॥ २ ॥
बगल मैँ लरिका सहर ढँढोरा,
नाहिँ लेइ सुधि काया की ॥ ३ ॥
पलटुदास सब जगत भुलाना,
लखि परछाहीँ छाया की ॥ ४ ॥

---

(१) कर लेने वाले ।

६८

मितऊ देहला न जगाय, निँदिया वैरिन भैली ॥टेक॥
की तो जागै रोगी भोगी, की चाकर की चोर।
की तो जागै संत बिरहिया, भजन गुरू के होय ॥ १ ॥
स्वारथ लाय सभै मिलि जागैं, बिन स्वारथ ना कोय।
परस्वारथ को वह नर जागै, जापै किरपा गुरु की होय ॥२॥
जागे से परलोक बनतु है, सोये बड़ दुख होय।
ज्ञान खरग लिये पलटू जागै, होनी होय सो होय ॥३॥

६९

बनिया समुझ के लाद लदनियाँ ॥ टेक ॥
यह सब मीता काम न आवै,
सँग न जाइ परधनियाँ ॥ १ ॥
पाँच मने की पूँजी राखत,
होइगे गर्ब गुमनियाँ ॥ २ ॥
करि ले भजन साध की सेवा,
नाम से लाव लगनियाँ ॥ ३ ॥
सौदा चाहै तो याँही करि ले,
आगे न हाट दुकनियाँ ॥ ४ ॥
पलटुदास गोहराय कहत हैं,
आगे देस निरपनियाँ ॥ ५ ॥

७०

को खोलै कपट किवरिया हो,
सतगुरु बिन साहिब ॥ टेक ॥
नैहर मैं कछु गुन नहिं सीख्यो,
ससुरे मैं भई फुहरिया हो।

अपने मन की बड़ी कुलवंती,

छुए न पावै गगरिया हो ॥ १ ॥

पाँच पचीस रहै घट भीतर,

कैान बतावै डगरिया हो ।

पलटूदास छोड़ि कुल जतिया,

सतगुरु मिले सँघतिया हो ॥ २ ॥

७१

अब से खबरदार रहु भाई ॥ टेक ॥

सतगुरु दीन्हा माल खजाना,

राखो जुगत लगाई ।

पाव रती घटने नहिँ पावै,

दिन दिन होत सवाई ॥ १ ॥

छिमा सील की अलफी पहिनो,

ज्ञान लँगोटि लगाई ।

दया कि टोपी सिर पर दै कै,

और अधिक बनि आई ॥ २ ॥

बस्तु पाइ गाफिल मति रहना,

निसु दिन करैा कमाई ।

घट के भीतर चोर लगतु हैं,

बैठे घात लगाई ॥ ३ ॥

तन बन्दूक सुमति कै सिँगरा,
ज्ञान के गज ठहकाई ।
सुरति पलीता हर दम सुलगै,
कस पर राख चढ़ाई ॥ ४ ॥
बाहर वाला खड़ा सिपाही,
ज्ञान गम्य अधिकाई ।
पलटूदास आदि के अदली,
हर दम लेत जगाई ॥ ५ ॥

७२

साहिब मेरा सब कुछ तेरा,
अब नाहीं कुछ मेरा है ॥ १ ॥
यहि हमता ममता के कारन,
चौरासी किहा फेरा है ॥ २ ॥
मृग-जल निरखि के तृषा बुझै नहिं,
सूखे अटका बेरा[१] है ॥ ३ ॥
यह संसार रैन का सुपना,
रूपा भ्रम सीपी केरा है ॥ ४ ॥
पलटुदास सब अरपन कीन्हा,
तन मन धन औ डेरा है ॥ ५ ॥

(१) नाव ।

७३

टुक हरि भजि लेहु, मन मेरे यार मुसाफिर ॥ टेक ॥
पानी पवन अगिन से जोरा, धरती और अकासा।
पाँच तत्तु का महल उठाया, तहाँ लिया तुम बासा ॥१॥
को तुम कवन कहाँ तेँ आया, बारम्बार ठगाया।
इतनी बात भुले के कारन, फिरि फिरि गोता खाया ॥२॥
इतनी बात चेत नहिं तुमको, जिस कारज को आया।
माया मोह लालच के कारन, अपनो रूप भुलाया ॥३॥
मन के कारन रामचंद्र जी, गये गुरू के पासा।
खसर फसर में कारज नाहीं, कहते पलटूदासा ॥ ४ ॥

७४

साहिब के दरबार मेँ कमी कुछ नाहीं।
चूक चाकरी मेँ परी दुबिधा मन माहीं ॥ १ ॥
बेनियाज[१] हाजिर रहै तकसीर हमारी।
कुसियारी के खेत मेँ किन चारा डारी ॥ २ ॥
अकिल आपनी क्या करै अकीन[२] न आया।
बुंद से पिंड सँवारिया तिस को बिसराया ॥३॥
खसम बिसारै आपना सोइ काफिर भाई।
पीर पराई ना लखै सोइ जाति कसाई ॥ ४ ॥
जाति वही असराफ है दिल दर्द को आनी।
पलटुदास सोइ पाक है दुर्वेस निसानी ॥ ५ ॥

(१) बिना प्रार्थना या माँग के। (२) विश्वास।

७५

सहस कमल दल फूला है, तहवाँ चलु भँवरा ॥ टेक ॥
यह संसार रैन को सुपना, कहा फिरै तू भूला है ॥१॥
पलटूदास उलटिगा भँवरा, जाय गगन बिच झूला है ॥२॥

७६

साहिब से परदा का कीजै ।
भरि भरि नैन निरखि लीजै ॥ १ ॥
नाचै चली घूँघट क्यों काढ़ै ।
मुख से अंचल टारि दीजै ॥ २ ॥
सती होय का सगुन बिचारै ।
कहि के माहुर[1] क्या पीजै ॥ ३ ॥
लोक बेद तन मन की डेर है ।
प्रेम रंग मैं क्या भीजै ॥ ४ ॥
पलटूदास होय मरजीवा[2] ।
लेहि रतन नहिं तन छीजै ॥ ५ ॥

७७

गुप्त मते की बात जगत मैं फहस[3] न कीजै ॥ टेक ॥
पात्र सुपात्र देखि जब लीजै, बस्तु ताहि को दीजै ॥१॥
यह संसार मोम का कपड़ा, जल बिच कोर न भींजै ॥२॥
तजि बकवाद मौन ह्वै रहिये, बोलत काया छीजै ॥ ३ ॥
पलटू कहै सुनो भाइ साधो, बचन गाँठि गहि लीजै ॥४॥

---

(१) विष। (२) जो मोती निकालने के लिये समुद्र मैं डुबकी लगाते हैं।
(३) प्रगट।

७८

नहीं मुख राम गाओगे। आगे दुख बड़ा पाओगे ॥१॥
राम बिन कौन तारैगा। पकड़ जमदूत मारैगा ॥२॥
कबौं[1] सतसंग ना कीन्हा। भूखे को नाहिं कुछ दीन्हा ॥३॥
माया औ मोह मैं भूले। कुटुम परिवार लखि फूले ॥४॥
पुछै धर्मराज जब भाई। बचन मुख नाहिं कहि आई ॥५॥
पलटूदास लखि रोया। सुघर[2] तन पाय के खोया ॥६॥

॥ भेद ॥

७९

पलटू कहै साच के मानौ।
और बात झूँठ कै जानौ ॥ १ ॥
जहवाँ धरनी नाहिं अकासा।
चाँद सुरज नाहीं परगासा ॥ २ ॥
जहवाँ पवन जाय ना पानी।
बेद कितेब मरम ना जानी ॥ ३ ॥
जहवाँ ब्रह्मा बिस्नु न जाहीं।
दस औतार न तहाँ समाहीं ॥ ४ ॥
आदि जोति ना बसै निरंजन।
जहवाँ सुन्न सबद नहिं गंजन ॥ ५ ॥
निराकार ना उहाँ अकारा।
सत्य सबद नाहीं बिस्तारा ॥ ६ ॥

---

(१) कभी। (२) सुंदर।

जहवाँ जोगी जोग न पावै ।
महादेव ना तारी[1] लावै ॥ ७ ॥
उहवाँ हद अनहद ना जावै ।
बेहद वह रहनी ना पावै ॥ ८ ॥
जहवाँ नाहिं अगिन परगासा ।
पाँच तत्तु ना चलता स्वासा ॥ ९ ॥
ब्रह्म ज्ञान ना पहुँचै उहवाँ ।
अनुभै पद ना बोलै तहवाँ ॥ १० ॥
सात स्वर्ग अपबर्ग न कोई ।
पिंड उहाँ ब्रह्मंड न होई ॥ ११ ॥
जहवाँ करता करै न पावै ।
सिद्धि समाधि ध्यान ना लावै ॥ १२ ॥
अजपा गिरा[2] लंबिका[3] नाहीं ।
जगमग झिलिमिलि उहाँ न जाहीं ॥ १३ ॥
सोहं सोहं उहाँ न बोलै ।
चलै न जुक्ति सुरति ना डोलै ॥ १४ ॥
उहवाँ नाहिं रहै अबिनासी ।
पूरन ब्रह्म सकै ना जासी ॥ १५ ॥
निरभै नाद नहीं ओंकारा ।
निरगुन रूप नहीं बिस्तारा ॥ १६ ॥

(१) ध्यान । (२) बानी । (३) गले के भीतर की घाँटी ।

पलटूदास तहाँ चलि गया ।
आगे हूँ पाछे ना भया ॥ १७ ॥
पलटू देखि हाथ को मलै ।
आगे कहै तो परदा खुलै ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

आदि अंत अरु मध्य नहिं, रंग रूप नहिं रेख ।
गुप्त बात गुप्ते रहो, पलटू तोपा[1] देख ॥ १९ ॥

८०

आदि अंत ठिकानो बातैं,
कहौं आपनी देखो हो ॥ टेक ॥
राह अजान पंथ को पावै,
त्रिकुटी घाट उतारा हो ।
अविगत नगर जाय जहँ पहुँचे,
मारग विहँग बिचारा हो ॥ १ ॥
बायें चंद सूर है दहिने,
सुखमन सुरति समानी हो ।
सोहं सोहं सुन में बोलै,
वही सब्द की खानी हो ॥ २ ॥
तुरिया बैठा जाग्रत जोगी,
लगी उनमुनी तारी हो ।
इँगला माहीं सहज समानी,
पिँगला पवन अहारी हो ॥ ३ ॥

---

(१) ढक दिया ।

हद पर बैठे सतगुरु बोलैं,
बेहद बोलै चेला हो ।
अजपा जाप छुटी है दुतिया,
अनुभव भया अकेला हो ॥ ४ ॥
सुन्न संवत द्वादस है अठवाँ,
चार तत्व से न्यारा हो ।
पलटू यह टकसारी सिक्का,
परखैगा कोइ प्यारा हो ॥ ५ ॥

८१

कौन करै बनियाई अब मोरे, कौन करै बनियाई ॥टेक॥
त्रिकुटी मैं है भरती मेरी, सुखमन मैं है गादी ।
दसयें द्वारे कोठी मेरी, बैठा पुरुष अनादी ॥ १ ॥
इँगला पिँगला पलरा दूनौं, लागि सुरति को जोती ।
सत्त सबद की डाँड़ी पकरौं, तौलौं भरि भरि मोती ॥२॥
चाँद सुरज दोउ करैं रखवारी, लगी तत्त की ढेरी ।
तुरिया चढ़ि के बेचन लागे, ऐसो साहिबी मेरी ॥ ३ ॥
सुतगुरु साहिब किहा सिपारस, मिली राम मोदियाई ।
पलटू के घर नौबति बाजै, निति उठि होत सवाई ॥४॥

८२

चलहु सखी वहि देस, जहवाँ दिवस न रजनी ॥ टेक ॥
पाप पुन्न नहिं चाँद सुरज नहिं,
नहीं सजन नहिं सजनी ॥ १ ॥

धरती आग पवन नहिँ पानी,
नहिँ सूतै नहिँ जगनी ॥ २ ॥
लोक बेद जंगल नहिँ बस्ती,
नहिँ संग्रह नहिँ त्यगनी ॥ ३ ॥
पलटूदास गुरू नहिँ चेला,
एक राम रम रमनी ॥ ४ ॥

८३

साधो भाई उहवाँ के हम बासी,
जहवाँ पहुँचै नाहिँ अबिनासी ॥ टेक ॥
जहवाँ जोगी जोग न पावै,
सुरति सबद नहिँ कोई ।
जहवाँ करता करै न पावै,
हम हीँ करैँ सो होई ॥ १ ॥
ब्रह्मा बिस्नु नाहिँ गम्मि सिव की,
नहीँ तहाँ अबिनासी ।
आदि जोति उहाँ अमल न पावै,
हमहीँ भोग बिलासी ॥ २ ॥
त्रिकुटी सुन्न नाहिँ है उहवाँ,
दंडमेरु ना गिरिवर ।
सुखमन अजपा एको नाहीँ,
बंकनाल ना सरवर ॥ ३ ॥

जहवाँ पाँच तत्त ना स्वासा,
जगमग झिलिमिलि नाहीँ ।
पलटूदास की औघट घाटी,
बिरला गुरमुख जाही ॥ ४ ॥

८४

गगन बोलै इक जोगी है, सुनु चित दे सखी री ॥टेक॥
खाय न पीवै मरै न जीवै, नाम सुधा रस भोगी है ॥१॥
वा के रंग रूप नहिँ रेखा, देखत परम बिरोगी है ॥२॥
ज्ञान दृष्टि से नजर परतु है, दसयेँ द्वार इक चोँगी है ॥३॥
पलटूदास सुनैगा सोई, चढ़ि सतगुरु की डोँगी है ॥४॥

८५

साधो भाई वह पद करहु बिचारा,
जो तीनि लोक से न्यारा ॥ टेक ॥
छर अच्छर चौँतिस मेँ कहिये,
सहस नाम तेहिँ माहीँ ।
निःअच्छर वह जुदा रहतु है,
लिखे पढ़े मेँ नाहीँ ॥ १ ॥
सुन्न गगन मेँ सबद उठतु है,
सो सब बोल मेँ आवै ।
निःसब्दी वह बोलै नाहीँ,
सो सत सबद कहावै ॥ २ ॥
रहनी रहै कथै फिरि कथनी,
उन को कहिये ज्ञानी ।

रहनी कथनी दूनौं छूटै,
सो पूरा बिज्ञानी ॥ ३ ॥
सुरति लगावै ध्यान धरै जो,
सो सब आप में आवै ।
सुरति ध्यान एको में नाहीं,
सो अजपा कहवावै ॥ ४ ॥
जोग करै सो रूढ़ मता है,
मुक्ति मँहै सब आवै ।
छोड़ै रूढ़ अरूढ़ को पावै,
साची मुक्ति कहावै ॥ ५ ॥
हद बेहद को अनुभै कहिये,
निरअनुभै ह्वै जावै ।
पलटुदास बेहद में बैठै,
सो वहि पद को पावै ॥ ६ ॥

॥ शान्ति ॥

८६

चित मेरा अलसाना, अब मोसे बोलि न जाइ
देहरी लागै परबत मो को, आँगन भया है वि
पलक उघारत जुग सम बीतै, बिसरि गया सं
बिष के मुए सेती मनि जागी, बिल मैं साँप
जरि गया छाछ भया घिव,निरमल,आपुइ से चुपियाना[1] पर

(१) चुप हुआ।

अब ना चलै जोर कछु मेरा, आन के हाथ बिकानी।
लोन की डरी परी जल भीतर, गलि के होइ गइ पानी॥३
सात महल के ऊपर अठएँ, सबद मैँ सुरति समाई।
पलटूदास कहैाँ मैँ कैसे, ज्यौँ गूँगे गुड़ खाई ॥ ४ ॥

८७

सत बेधि रहो है[1], का से यह भेद कहैाँ ॥ टेक ॥
रोम रोम मैँ नाद उठतु है, जग गति जाइ जरै।
हाल हमारी कोऊ ना जानै, और की और करै ॥ १ ॥
पुलकित गात पलक न परै मोर, टकटक ताकि रहो।
सिथिल भये मुख बचन न आवै, ज्योँ ठगहार गहो ॥२
यह अचरज का से अब कहिये, जिन देखा सोइ जानै।
होइ अचरज अचरज को खोजै, तब अचरज पहिचानै ॥३
पलटू हेरत आपु हिरानो, केहि बिधि करै सम्हार।
होइ अचेत झुकि झुकि परै चेतन, ऐसो हाल हमार ॥४॥

॥ साच ॥

८८

साचा हरि दरबार, झूठा टिकै न कोई ॥ टेक ॥
झूठा छिपै न लाख छिपावै, अंत को होत उघार ॥ १ ॥
झूँठा रंग रँगै जो कोई, चटक रहै दिन चार ॥ २ ॥
हरि की भक्ति सहज है नाहीं, ज्यौँ चोखो तरवार ॥३॥
पलटूदास हाथ अपने से, सिर को लेइ उतार ॥ ४ ॥

(१) दूसरे पाठ मैँ "सत बेधि रहो" की जगह "मन मैाज मिलो" है।

॥ दीनता ॥

८६

जाय मनाओँ मैं साजन को,
केहि भाँति सखी री ॥ टेक ॥
भूली फिरौँ राह ना पाओँ,
सतगुरु चाही सँग लागन को ॥ १ ॥
मैं मूरख मन मलिन भयो है,
ज्ञान चाही तन माँजन को ॥ २ ॥
भूख पियास छुटै नहिं मेरी,
पाँच भूत चाही त्यागन को ॥ ३ ॥
मोह मया निद्रा रहै घेरे,
आठ पहर चाही जागन को ॥ ४ ॥
पलटूदास साध की संगति,
उठि उठि मन चाहै भागन को ॥ ५ ॥

॥ अनुभव ज्ञान ॥

९०

कहिबे से क्या भया भाई, जब ज्ञान आपु से होइ ॥टेक॥
अललपच्छ के चेटुका[1], वा को कौन करै उपदेस ।
उलटि मिलै परिवार मैं, वा से कौन कहै संदेस ॥ १ ॥
ज्यों सिसु[1] होत मराल[2] के, वा को कौन सिखावै ज्ञान ।
नीर कँहै अलगाइ कै, वह छीर करतु है पान ॥ २ ॥
सिंह के बच्चा गिरि पस्यो, वह खेलत तुरत सिकार ।
वा को कौन सिखावई, वो हस्ती डारत मार ॥ ३ ॥

(१) बच्चा । (२) हंस ।

संत को कौन सिखावता, उन्ह अनुभव भा परकास ।
सिखई बुधि केहि काम की, जो हृदय न पलटूदास ॥४॥

॥ बाचक ज्ञान ॥

६१

बाचक ज्ञान न नीका ज्ञानी,
ज्यों कारिख का टीका ॥ टेक ॥
बिनु पूँजी को साहु कहावै,
कौड़ी घर में नाहीं ।
ज्यों चोकर के लड्डू खावै,
का सवाद तेहि माहीं ॥ १ ॥
ज्यों सुवान[1] कुछ देखि कै भूँकै,
तिस ने तो कछु पाई ।
वा की भूँक सुने जो भूँकै,
सो अहमक कहवाई ॥ २ ॥
बातन सेती नहीं होइ राजा,
नहिं बातन गढ़[2] टूटै ।
मुलुक मँहै तब अमल होइगा,
तीर तुपक जब छूटै ॥ ३ ॥
बातन से पकवान बनावै,
पेट भरै नहिं कोई ।
पलटूदास करै सोइ कहना,
कहे सेती क्या होई ॥ ४ ॥

(१) स्वान=कुत्ता । (२) क़िला ।

॥ अद्वैत ॥

९२

जोई जीव सोई ब्रह्म एक है,
  दृष्टि अपानी चर्मा ॥ टेक ॥
जिव से जाइ ब्रह्म तब होता,
  जिव बिनु ब्रह्म न होई ।
फल में बीज बीज में फल है,
  अवर न दूजा कोई ॥ १ ॥
नीर में लहर लहर में पानी,
  कैसे के अलगावै ।
छाया में पुरुस पुरुस में छाया,
  दुइ कहवाँ से पावै ॥ २ ॥
अछर में मसी[1] मसी में अच्छर,
  दुइ कहवाँ से कहिये ।
गहना कनक कनक में गहना,
  समझि चुप्प करि रहिये ॥ ३ ॥
जीव में ब्रह्म ब्रह्म में जिव है,
  ज्ञान समाधि में सूझै ।
मटि में घड़ा घड़ा में माटी,
  पलटूदास योँ बूझै ॥ ४ ॥

(१) स्याही ।

॥ मन ॥

६३

मन बनिया बान न छोड़ै ॥ टेक ॥

पूरा बाट तरे खिसकावै, घटिया कै टकटोरै।
पसँगा माँहै करि चतुराई, पूरा कबहुँ न तौलै ॥ १ ॥
घर मैं वा के कुमति बनियाइन, सबहिन को झकझोरै।
लड़िका वा का महा हरामी, इमरित मैं बिष घोरै ॥२॥
पाँच तत्त का जामा पहिरे, ऐँठा गुइँठा डोलै।
जनम जनम का है अपराधी, कबहूँ साच न बोलै ॥३॥
जल मैं बनिया थल मैं बनिया, घट घट बनिया बोलै।
पलटू के गुरु समरथ साईं, कपट गाँठि जो खोलै ॥ ४ ॥

६४

सो बनिया जो मन को तौलै ॥ टेक ॥

मनहिं के भीतर बसी बजार।
मनहीं आपु खरीदनहार ॥ १ ॥
मनहीं में लेन देन मनहिं दुकान।
मनहीं में मन की गुजरान ॥ २ ॥
मनहीं मैं लादै उलदै अनत न जाय।
मनहिं की पैदा मनहि मैं खाय ॥ ३ ॥
मनहीं मैं तराजू मनहिं मैं सेर।
पलटूदास सब मनहीं का फेर ॥ ४ ॥

॥ माया ॥

६५

माया हमैं अब जनि बगदावो,
तुम तो ठगिनी जग बौरावो ॥ टेक ॥
देवन के घर भइउ अपसरा,
जोगी के घर चेली ।
सुर नर मुनि तौ सब ही खायो,
होइ अलमस्त अकेली ॥ १ ॥
कृस्न कँहै गोपी होइ खायो,
राम कँहैं होइ सीता ।
महादेव काँ पारबती होइ,
तो से कोउ न जीता ॥ २ ॥
बिसुन कँहै लछमी होइ खायो,
ब्रह्मा खिस्टि बड़ाई ।
सिंगी रिषि को बन मैं खायो,
तुम्हरी फिरी दुहाई ॥ ३ ॥
दौलत होइ तिनु[1] लोकहि खायो,
गिरही की है नारी ।
पलटूदास के द्वार खड़ी है,
लौंड़ो होइ हमारी ॥ ४ ॥

---

(१) तीनों ।

९६

हम से फरक रहु दूर,
माया मौत तुलानी ॥ टेक ॥
आन के लेखे तुम अमृत लागहु,
हमरे लेखे जस पानी ।
हमरे तुँह लौंड़ी अस नाहीं,
औरन के लेखे घर रानी ॥ १ ॥
औरन के लेखे तू परवत[1],
हम राई सम जानी ।
सगरो अमल करेहु तुँह माया,
हम से रहो अलगानी ॥ २ ॥
तीन लोक तुँह निगल गई है,
तेहि पर नाहिँ अघानी ।
पलटुदास कह बकसहु माया,
नरक कि तुँही निसानी ॥ ३ ॥

९७

सोई है अतीत जो तो माया तेँ अतीत ॥ टेक ॥
माया ठगिनी ठगा संसार ।
सुर नर मुनि बोरे मँझधार ॥ १ ॥
माया बोलै मीठी बोल ।
गाँठ से ज्ञान ध्यान लेइ खोल ॥ २ ॥

---

(१) पहाड़ ।

माया है यह काली नाग ।
(जेहि काँ) काटै पानी सकै न माँग ॥ ३ ॥
पलटूदास माया यह काल ।
भागि बचे साहिब के लाल ॥ ४ ॥

॥ कुमति ॥

९८

जहाँ कुमति के बासा है ।
सुख सपने हु नाहीं ॥ टेक ॥
फोरि देत घर मोर तोर करि ।
देखै आपु तमासा है ॥ १ ॥
कलह काल दिन रात लगावै ।
करै जगत उपहासा है ॥ २ ॥
निरधन करै खाये बिनु मारै ।
आछत अन्न उपवासा है ॥ ३ ॥
पलटूदास कुमति है भौंड़ी[1] ।
लोक परलोक दोउ नासा है ॥ ४ ॥

॥ पंडित ॥

९९

पढ़ि पढ़ि क्या तुम कीन्हा पंडित,
अपना रूप न चीन्हा ॥ टेक ॥
औरन को तुम ज्ञान बताओ,
तुम को परै न बूझी ।

(१) बुरी ।

जस मसालची सबहिं दिखावै,
वा को परै न सूझौ ॥ १ ॥
अपनी खबर नहीं है तुम को,
औरन को परमोधो ।
पढ़ना गुनना छोड़ि के पाँड़े,
अपनी काया सोधो ॥ २ ॥
इन्द्रिन से आजिज[1] तुम रहते,
इन्द्री मारि गिराओ ।
माया खातिर बकि बकि मरते,
मन अपनो समुझाओ ॥ ३ ॥
बुद्धि मँहै परबीन चतुर हौ,
खाँड़ धूरि में सानौ ।
पलटूदास कहै सुनु पाँड़े,
बचन हमारा मानौ ॥ ४ ॥

॥ कर्म भर्म निषेध ॥

१००

तिरथ मैं बहुत हम खोजा,
उहाँ तो नाहिं कुछ पाया ।
मूरति को पुजि पछिताने,
नजर में नाहिं कुछ आया ॥ १ ॥
मुए हम बर्त के करते,
बेद को सुना चित लाई ।

(१) आधीन, ज़ेर ।

जोग औ जुगति करि थाके,
सजन की खबर नहिँ पाई ॥ २ ॥
क्रिया जप तप फेरि माला,
खोजा षट दरस में जाई ।
कोई ना भेद बतलावै,
सबै सतसंग गुहराई ॥ ३ ॥
परे जब संत के द्वारे,
संत ने आप सब कीन्हा ।
दास पलटू जभी पाया,
गुरू के चरन चित लाया ॥ ४ ॥

१०१

वह दरबारा भारा साधो,
हिन्दू मुसलमान से न्यारा ॥ टेक ॥
मक्के रहे न ठाकुरद्वारा,
है सब मेँ सब खोजनहारा ॥ १ ॥
नहिँ दरगाह न तीरथ संगा,
गंगा नीर न तुलसी भंगा ॥ २ ॥
सालिगराम न महजिद कोई,
उहाँ जनेव न सुन्नत होई ॥ ३ ॥
पढ़ै निवाज न लावै पूजा,
पंडित काजी बसै न दूजा ॥ ४ ॥

फेरै न तसबी जपै न माला,
ना मुरदा ना करै हलाला ॥ ५ ॥
मारै न सुवर जिबहै ना गाई,
कलमा भजन न राम खुदाई ॥ ६ ॥
एकादसी न रोजा करई,
डंडवत करै न सिरदा[1] परई ॥ ७ ॥
पलटूदास दुई की किस्ती,
दोजख नर्क बैकुंठ न भिस्ती ॥ ८ ॥

॥ जाति भेद निषेध ॥

१०२

कोई जाति न पूछै हरि को भजै सो ऊँचा है ॥ १ ॥
कोटि कुलीन होइ ब्रह्मा सम सोभी उन से नीचा है ॥२॥
सुपच अजामिल सदन रैदासा कैान बीज कै सींचा है ॥३॥
सेवरी भील बिदुर दासी सुत भाजी बेर गुलीचा[2] है ॥४॥
पलटूदास चढ़ी जब गनिका पकरि बिमान हरि खींचा है ॥५॥

॥ भक्त के लच्छण ॥

१०३

(छन्द)

भक्त के मैं कहूँ लच्छन साधु करहु बिचारनं ।
प्रथम दासा तनै करके सन्त से हित लावनं ॥ १ ॥
रहत चालि कै सन्त सेवा द्रब्य तन मन वारनं ।
तिलक कै अस्नान पूजा कर्म मैं चित लावनं ॥ २ ॥

---

(१) सिजदा । (२) जल्दी २ खाना ।

तब उपजै बैराग मन मैँ जोग पर चित धावनं ।
जोग से तब ज्ञान होवै ज्ञान भक्ति जगावनं ॥ ३ ॥
भक्त द्वादस अष्ट आज्ञा सोई सन्त परायनं ।
करै कर्म निकर्म ह्वैके सोई धर्म सनातनं ॥ ४ ॥
अष्ट सिधि नव निद्धि ठाढ़ी ताहि को बिसरावनं ।
जोग जीत अतीत माया सोई है अवधूतनं ॥ ५ ॥
कर्म इन्द्री ज्ञान इन्द्री एक रस करि राखनं ।
पाँच तत्त औ भूत पाँचो रैन दिवस जगावनं ॥ ६ ॥
बुद्धि चित हंकार जोगवे सोई है सन्यासनं ।
काम क्रोध औ मोह लालच ताहि को बिसरावनं ॥ ७ ॥
छुटै भूख पियास निद्रा सकल इन्द्री जीतनं ।
दुष्ट मित्र को एक जानै अस्तुति निन्दा निचिन्तनं ॥८॥
रहै रहनी ओट छोड़ै अलो के मैदाननं ।
काना फुसकी बात छोड़ै ज्ञान चौड़ा बजावनं ॥ ९ ॥
इक पहर एकांत ह्वै के सुन्न ध्यान लगावनं ।
इक पहर सुन स्रवन हरिजस अर्थ सहित मिलावनं ॥१०॥
पहर भरि कै नाद रसना सकल जंत्र बजावनं ।
इक पहर कै कर्म किरिया रैन दिवस कटावनं ॥ ११ ॥
पदम आसन नाहिँ छूटै आठ पहर लगावनं ।
करै संजम लेय ओगरा साध रहनी लच्छनं ॥ १२ ॥
दसो द्वारा मूँदि मेलै पवन जतन करावनं ।
मध्य त्रिकुटी गंग जमुना तहाँ आनि चढ़ावनं ॥ १३ ॥

चढ़ै गगन अकास गरजै द्वार दसम निकासनं ।
जोति झिलमिल झरै मोती हंस कँहै चुगावनं ॥ १४ ॥
सुरत से जब निरत होवै सुरत सब्द कहावनं ।
दिब्य दृष्टि त्रिलोकि सरवन सब्द सुरत मिलावनं ॥ १५ ॥
रंग ना कछु रूप रेखा तहाँ सब कछु देखनं ।
दास पलटू होय ऐसन सोई सन्त अलेखनं ॥ १६ ॥
एक मूल दुइ चक्र नाभी चित्र उद्र के बीचनं ।
बाम दक्खिन सब्द त्रिकुटी चक्र बिधो सुधारनं ॥ १७ ॥
चाँद सूर अकास आनै प्रान बैठि सुधारनं ।
अष्ट दल यह कँवल फूलै ध्यान कमठ लगावनं ॥ १८ ॥
मीन मारग पवन पंछी सेस चाल चलावनं ।
अर्ध उर्ध के बीच आसन खेल भेद मिलावनं ॥ १९ ॥
इँगला पिँगला सोधि सुखमन अजपा जाप जपावनं ।
नाद अनहद लंबिका सुर बंक नाल सोधावनं ॥ २० ॥
जाग्रत सूतै सुप्न जागै जाग्रत सुप्न सुषोपतिं ।
तुरिया सेती अतीत होवै सोई है आरूढ़नं ॥ २१ ॥
देहिक दैविक छुटै भवतिक सोइ अनन्य कहावनं ।
इन्द्री रहित बिछेप नाहीं सोई है आतीतनं ॥ २२ ॥
पुलक गात अनन्द मूरत काल ताहि न ब्यापनं ।
अलमस्त है मुदगलित हस्तो सोई है परमहंसनं ॥ २३ ॥
निर्बिकार निर्बैर ह्वै के सान्ति मन मैं लावनं ।
एक ब्रह्म समान जानै दुतिया दूरि बहावनं ॥ २४ ॥

तेल धारा लगी निसि दिन सोहं सब्द सुहावनं ।
ऐसन जोगी रावला जो ताहि को आदेसनं ॥ २५ ॥
लिखै पढ़ै मैं नाहिं आवै अच्छर नाहिं निरच्छरं ।
नाम सोई अनाम कहिये सदा सन्त सरूपनं ॥ २६ ॥
सात स्वर्ग अपवर्ग ऊपर ताहि चित्त लगावनं ।
कोटि परलय नाहिं पहुँचै तहाँ सन्त सिंघासनं ॥ २७ ॥
आठ लच्छ त्रिकाल मूरति अनहद तूर बजावनं ।
आवागवन से रहित होवै ऐसे सन्त को बन्दनं ॥ २८ ॥
अकल कला अनन्द मूरति लागि भजन अखंडनं ।
बिन्द से जो होय न्यारा सोई है अबिनासिनं ॥ २९ ॥
मन न बुद्धि न चित्त पहुँचै निराकार निरच्छरं ।
दास पलटू अकथ कथनो सोई साध समागतं ॥ ३० ॥
गगन मद्धे पदम आसन हमहिं हम गुहरावनं ।
थरै मानिक झरै मोती सोई है परम बिसनवं ॥ ३१ ॥
कंचन काँच न भेद राखै पक्वा पक्वो त्यागनं ।
मोर तोर बिकार छूटै एक धारा धारनं ॥ ३२ ॥
दुष्ट मित्र को एक जानै अस्तुति निन्दा त्यागनं ।
दुक्ख सुख है एक दोऊ हरष सोक बिसारनं ॥ ३३ ॥
तजै आसा सकल जग की परम धरम संतोषनं ।
तत्त-दरसी भजन द्वादस सहज समाधि लगावनं ॥ ३४ ॥
संग्रह त्याग न जोग भोगी पाप पुन्य बिसारनं ।
चारि फल औ तीन गुन को बिषय तृन सम त्यागनं ॥३५॥

महा परलय ध्यान कीजै तहाँ इक ओंकारनं ।
ब्रह्म ज्ञान न जोग जप तप नेम नहिं आचारनं ॥ ३६ ॥
चारि वरन से होय न्यारा पंडिता षटदर्सनं ।
घाटि वाढ़ि न प्रीति कीजै एक धारा धारनं ॥ ३७ ॥
अजर जरै असाध साधै मर जीवै सोइ पावनं ।
साध कै तब छुटै साधन साध असाध मिलावनं ॥ ३८ ॥
मूल बिन अस्थूल सूच्छम अछै-वृच्छ फरावनं ।
उड़ै पंछी खाय फल को अमर पुरुष कहावनं ॥ ३९ ॥
अर्ध पुंड लिलाट रेखा चक्र अंग सुहावनं ।
चन्द्र हाँस सिँगार बीरी धुई ध्यान जरावनं ॥ ४० ॥
सीस-फूल जड़ाव जूड़ा अंजन ज्ञान लगावनं ।
मानसी नथुनी नेह ढेढ़ी सब्द माँग भरावनं ॥ ४१ ॥
विवेक घँघरा तत्त सारी फुफुदी है बिस्वासनं ।
साधु सेवा अंग अँगिया रहनी बाजू-बन्दनं ॥ ४२ ॥
संतोष अंग सुगंध लावै बास चहुँ दिसि धावनं ।
सुरत निरत बर बाँधि घुँघुरू पारब्रह्म रिझावनं ॥४३॥
जीव ब्रह्म से भेद नाहीं सोई है परिवर्तनं ।
दास पलटू होय ऐसन सोई है मम गुरुदेवनं ॥ ४४ ॥
भक्ति जोग कोइ करै अबिरल यही मंत्र बिचारनं ।
सर्व जीव समान जानै परम धर्म परायनं ॥ ४५ ॥
भक्ति है अनपायनी सद पावन पात्र कै नायकं ।
कोटि जन्म सतसंग कैकै सुद्ध हृदय तब आवनं ॥ ४६ ॥

तरै कर यह मूल द्वारा और नाहिं उपायनं।
भक्ति जोग है मूल टीका सर्व मंत्र विचारनं॥ ४७॥
राम कृस्न उचारि रसना हृदय तत्त निरूपनं।
सुरत सेल्ही जाप मुद्रा सोई संत परायनं॥ ४८॥
ज्ञान गुदरी गले सोहे चन्द्र तिलक लिलाटनं।
टोप सिर पर जोति झलके प्रेम भभूत चढ़ावनं॥ ४९॥
अहुबंद खोलहिं निरत प्रति कुबरी है संतोषनं।
धुई ध्यान अकास जारै फामरी बिबेकनं॥ ५०॥
छिमा आसन सांति तुम्बा मेखली पर-स्वार्थनं।
सब्द दोनों कान कुंडल तत्त द्वादस पुस्तकं॥ ५१॥
संजम माला पवन सुमिरन अजपा जाप जपावनं।
अर्सठ तीरथ साधु सेवा गुफा पिंड बनावनं॥ ५२॥
जटा सील सुभाव अचला भजन अमल चढ़ावनं।
दास पलटू होय ऐसन सोई है अतीतनं॥ ५३॥
काया कुंडी पवन घोटा अमल है हरि नामनं।
रहनी साफी तत्त प्याला ऐसोई है अचिंतनं॥ ५४॥
संजम तोय तड़ाग पूरन ताहि बैठि नहावनं।
धीरता सोइ पादुका है ताहि पर असवारनं॥ ५५॥
मनै मूरति तनै देवल ताहि कौ अब पूजनं।
गगन मैं मन मगन होवै चित्त पुहुप चढ़ावनं॥ ५६॥
ब्रह्म ज्ञान त्रिसूल गल बिच मेखली मृगछालनं।
खुसी भोजन दया डासन पान खाय प्रतीतनं॥ ५७॥

भाव भक्ति को ओढ़ि ऊपर गगन मढ़ै सूतनं ।
गरमी पाला एक जानै सीत धूप बराबरं ॥ ५८ ॥
चित्त चीपी ज्ञान डीबी ध्यान ईंधन लावनं ।
गंग जमुना बीच आसन तहाँ पवन चढ़ावनं ॥ ५९ ॥
फूटि गे ब्रह्मंड जबही सकल सिद्ध कहावनं ।
सहस दल तहँ कँवल फूला मानसरोवर बीचनं ॥ ६० ॥
गगन बीचे बजत मुरली सोहं सब्द सुहावनं ।
कुंजगली है साँकरी इक दूजा और न जावनं ॥ ६१ ॥
पवन की इक बहै सलिता बंक नाल के बीचनं ।
सहस धारा असी संगम रैन दिवस गुजारनं ॥ ६२ ॥
सुन्न मैं कछु नाहिं सूझै तहाँ बहुत अँधेरनं ।
कड़क बिजुली तहाँ तड़पै जहाँ चित्त सम्हारनं ॥ ६३ ॥
चन्द्र बाँये सूर दहिने अललपच्छ उड़ावनं ।
उलटि मकरी तार गहि कै सुरति को योँ लावनं ॥ ६४ ॥
महल अठयेँ जाय बैठे जहाँ ना कोउ दूजनं ।
बरत है इक दीप जहवाँ महल में उँजियारनं ॥ ६५ ॥
दास ईस से भेद नाहीं मौज बैठि के मारनं ।
दास पलटू होय ऐसन सोई है परमेसुरं ॥ ६६ ॥
चिन्ता नाहीं छुटत मन से बिना जोग के साधनं ।
अगम निगम बिचारि देखैा यहो मत सिद्धान्तनं ॥६७॥
ध्रुव प्रहलाद सनकादि कीन्हा ब्यास औ सुकदेवनं ।
दत्तात्रेय जड़भरथ कीन्हा राजा रघु सोइ धारनं ॥६८॥
सहित जननी कपिल कीन्हा जनक अष्टावक्रनं ।
सोमुख से हरि आपु भाखा सहित ऊधो अर्जुनं ॥६९॥

सोई नौ जोगेसर कीन्हा नानक तुलसि कबीरनं ।
दास पलटू साधि यह सब बचन सो प्रतिपालनं ॥७०॥
बिना जोग न छुटै चिन्ता कोटि करै उपायनं ।
जोग करि जब सधै कारज निर्गुन सर्गुन बराबरं ॥७१॥
उलटि ताके चाल उलटी अलख को आलेखनं ।
सन्त जन जब करत दाया लगै सो उपदेसनं ॥ ७२ ॥
पड़ा रहु सतसंग भीतर सन्त बड़े दयालनं ।
भर्म भागै मगन लागै भृङ्गी कीट बनावनं ॥ ७३ ॥
पारस के परसंग सेती लोह ह्वै गे कंचनं ।
मलया के परसंग सेती सकल बन भे चन्दनं ॥ ७४ ॥
नाम को जो मिलन चाहै और नाहिँ उपायनं ।
जग हँसै तो हँसन दीजै लोक लाज बहावनं ॥ ७५ ॥
जौन रहनी संत रहते रहनी सोई अब धारनं ।
लोभ मोह हंकार त्रसना ताहि दूर बहावनं ॥ ७६ ॥
भूख और पियास निद्रा काम क्रोध बिसारनं ।
आँख मूँदि के ध्यान लावै द्वार दसवाँ खोलनं ॥ ७७ ॥
नाम के सुर नाद अनहद सब्द के झनकारनं ।
गैब कँहै स्रवन सूच्छम सब्द कँहै सुनावनं ॥ ७८ ॥
मंत्र बिनु इक बजत जंत्री नाना लहर तरंगनं ।
मौज मारै बैठि के तहँ रतन जड़ित सिंघासनं ॥ ७९ ॥
वही है तिहुँ लोक ऊपर उन से बड़ा न दूसरं ।
साष्टाँग दंडवत पलटू तिनहिँ को परदच्छिनं ॥ ८० ॥
सेस कमठ अकास आनै चाँद सूर पतालनं ।
गगन की धुनि खबरि आनै सोई सन्त सुजाननं ॥८१॥

तिलक द्वादस भजन इक-रस गगन मेँ झनकारनं ।
पवन निसि दिन चलै उलटी पछिम गंग बहावनं ॥८२॥
कठिन मारग बिषम घाटी बहुत सूच्छम पंथनं ।
पहिले सीस उतारि घालै पाँव को तब राखनं ॥८३॥
नाम का घर ख्याल नाहीं सहज मत कोउ जाननं ।
जीवत मरै सोई भेद पावै लोक लाज बहावनं ॥८४॥
अधर मेँ दरियाव है इक पवन को तहकोकनं ।
अधोमुख इक कूप है दरियाव के तहँ बीचनं ॥८५॥
कूप ऊपर ऊँच है इक अधर बीच सुमेरनं ।
सुमेर ऊपर महा देवल देवल ऊपर छेदनं ॥ ८६ ॥
ताहि पैँड़े निकरि जावै सोई सन्त सुजाननं ।
खोजि के जब खोजि पावै सकल दुक्ख मिटावनं ॥८७॥
कर्म बंधन सकल छूटै जीवन मुक्ति कहावनं ।
भजत भजत भजन होइगो सोई है करतारनं ॥ ८८ ॥
भजन मेँ है जुगल मारग बिहँग और पपीलनं ।
पपील मद्धे सिद्ध कहिये बिहँग सन्त कहावनं ॥ ८९ ॥
अनेक जन्म जब सिद्ध होवै अन्त सन्त कहावनं ।
सिद्ध से जब सन्त होवै आवागवन मिटावनं ॥ ९० ॥
सन्त के हरि निकट रहते सिद्ध से हरि दूरिनं ।
सिद्ध चिन्ता रहत निसि दिन सन्त भजन अचिन्तनं ॥९१॥
रूप रस औ गंध छूटै पारस को अलगावनं ।
तरत है ले नाम ओंकर सोई मंत्र बिचारनं ॥ ९२ ॥

बिन्द मैं तहँ नाद बोलै रैन दिवस सुहावनं।
दास पलटू होय ऐसन सोई बिस्नु सरूपनं ॥ ९३ ॥
सीस धरै उतारि भूँई रुंड से तब धावनं।
सीस पर जब पाँव राखै अधर चाल चलावनं ॥ ९४ ॥
अधोमुख इक कूप है तेहि कूप भीतर जावनं।
सुरति से ब्रह्मंड खोलै सब्द को ठहरावनं ॥ ९५ ॥
तहँ बुन्द चूवै गगन से इक साँपिनी मुख मध्यनं।
मारि साँपिनि चलै आगे अमी रस तेहि पीवनं ॥ ९६ ॥
हद अनहद को छोड़ि देवै बेहद कदम चलावनं।
बेहद के मैदान भीतर सब्द की झनकारनं ॥ ९७ ॥
सेत बरन सरूप वा को तहाँ ध्यान सुहावनं।
बुन्द जाय समुद्र मिलि गे बहुरि नहिं फिरि आवनं ॥९८॥
सहज लगी समाधि जेकर भजन सदा अखंडनं।
धन्य जननी पिता ओकर जहाँ है हरि भक्तनं ॥ ९९ ॥
धन नगर धन देस कहिये जहाँ भक्त निवासनं।
बैकुंठ है लघु तासु पटतर[1] सहित मथुरा अवधेसनं ॥१००॥
प्रीति से जो छंद बाँचै सहित कथा अस्थूलनं।
दास पलटू मोर पद को अन्त समय पधारनं ॥ १०१ ॥

॥ साध सन्त की रहनी ॥

१०४

सुनिये साध सन्त की रहनी, भाई और बात ना कहनी ॥१
मन से सँकलप बिकलप छोड़ै, जग से तोड़ै हरि से जोड़ै ॥२
कबहीं ओढ़ै साल दुसाला, कबहीं ओढ़ि रहै मृगछाला ॥३

(१) मुक़ाबले में।

कबहीं नहीं पाँव में जोड़ा, कबहीं सौ सौ कोतल घोड़ा ॥४॥
कबहीं अतर फुलेल लगावै, कबहीं सिर पर खाक चढ़ावै ॥५
कबहीं ज्ञान कहै समुझावै, कबहीं चुप करि तारी[1] लावै ॥६
कबहीं हमा-नियामत[2] खावै, कबहीं दस फाका वित जावै ॥७
कबहीं हिंदू होइ कै बैठै, कबहीं मुसलमान में पैठै ॥ ८ ॥
कबहीं सेज सुपेदी होई, कबहीं जमीं महै रहै सोई ॥ ९ ॥
कबहीं बाँका भेष बनावै, कबहीं भेष को दूरि बहावै ॥१०
कबहीं सिर पर जटा बिसाला, कबहीं कंठी टीका माला॥ ११
कबहीं होइ कै बैठै जोगी, कबहीं सब रस का है भोगी ॥ १२
कबहिं कीरतन नाच करावै, कबहिं आप ही बन बन धावै १३
कबहीं हाजिर[3] महल अटारी, कबहीं टाटी नाहिं दुवारी॥१४
कबहीं लड़िकन के सँग खेलै, कबहीं बेद पुरान को बोलै॥१५
कबहीं रोवै सिर दै मारै, कबहीं हँसि हँसि निसि दिन टारै १६
कबहीं कनक थार में पावै, कबहीं हाथै पर लै खावै ॥१७
कबहीं परे पाँव में छाला, कबहीं चलता है सुखपाला[4] ॥१८
कबहीं फटहो-[5] लँगोटी, कबहीं है मोतिन की चोटी ॥१९
कबहीं माया की है कोठी, कबहीं लोन बिना की रोटी ॥२०
कबहीं राज सिंहासन जागै,[6] कबहीं भिच्छा घर घर माँगै॥२१

छंद

पलटू ये लच्छन सन्त के, कछु नाहिं संग्रह त्याग है।
प्रारब्ध पर वै डारि देते, लगै न उनको दाग है ॥ २२ ॥
आपनी सब उक्ति छोड़ो, जुगति ना कछु कीजिये।
करनवाला और है, संतोष क्यों ना लीजिये ॥ २३ ॥

---

(१) ध्यान। (२) छप्पन प्रकार के भोजन। (३) दूसरी लिपि में "हजारों" है। (४) पालकी। (५) यहाँ ठेठ हिन्दी शब्द गुदा के अर्थ का है। (६) दूसरी लिपि में "गाजै" है।

दोहा

पलटू गुनना छोड़ि दै, चहै जो आतम सुक्ख।
संसय सोइ संसार है, जरा मरन को दुक्ख ॥ २४॥

कबहीँ हरि दासन कै दासा, कबहीँ पूरन ब्रह्म निवासा २५
कबहीँ सब से गोड़ धरावै, कबहीँ आप पायँ परि आवै ॥२६
कबहीँ कहै गरीबी बानी, कबहीँ ह्वै बैठै अभिमानी ॥ २७ ॥
कबहीँ हरि लीला को गावै, कबहीँ आपु में राम बतावै ॥२८
कबहीँ जग को साच बतावै, कबहीँ मिथ्या करि ठहरावै॥२९
कबहीँ सर्गुन बात बतावै, कबहीँ निर्गुन रूप दिखावै ॥ ३०
कबहीँ द्वैत मता बतरावै, कबहीँ अद्वैत ह्वै जावै ॥ ३१ ॥
कबहीँ कारज ह्वै दिखरावै, कबहीँ कारन में मिलि जावै॥३२
कबहीँ रुष्ट पुष्ट ह्वै जावै, कबहीँ हाड़े हाड़ दिखावै ॥ ३३
कबहीँ घरबासी ह्वै जावै, कबहीँ महा तयाग दिखरावै ॥३४
कबहीँ रोज हजारोँ खरचै, कबहीँ आप खाय बिन तरसै॥३५
कबहीँ संग हजारोँ भेषा, कबहीँ फिरत अकेले देखा ॥३६॥
कबहीँ निन्दा नीकी लागै, कबहीँ निन्दा सुनि कै भागै ॥३७
कबहीँ अस्तुति सुनि कै रोवै, कबहीँ अस्तुति सुनि खुस होवै ॥३८
कबहीँ नारिन से हँसि बोलै, कबहीँ नाहिँ पलक को खोलै ३९
कबहीँ सब संसार हरावै, कबहीँ हार आपु से जावै ॥ ४०
कबहीँ भूप दरस ना पावै, कबहीँ भूप के घर चलि जावै ॥४१
कबहीँ दुष्ट को निकट बुलावै, कबहीँ क्रोध रूप दिखरावै ॥४२
कबहीँ मित्र को गारी देता, कबहीँ लाय हृदै में लेता ॥४३॥
कबहीँ गंगा बैठि नहावै, कबहीँ खंडन करि बतलावै ॥४४
कबहीँ पात एक ना तोरै, कबहीँ डार पात सब मोरै ॥४५
कबहीँ सुभ को असुभ बतावै, कबहीँ असुभ को सुभ ठहरावै ॥४६

कबहीं सब ज्ञानिन को राजा, कबहिं करै मूरख को काजा ॥४७
कबहीं मूरति को सिर नावै, कबहीं मूरति फोड़ि उड़ावै॥४८
कबहीं तिरगुन किहे पसारा, कबहीं तिरगुन से है न्यारा॥४९
कबहीं उठि कै मारन धावै, कबहीं छिमा समुँद ह्वै जावै ॥५०
कबहीं करत नेम आचारा, कबहीं छूति को नाहिं बिचारा५१
कबहीं कंचन दूरि बहावै, कबहीं कौड़ी लै गठियावै ॥५२
कबहीं गरमी पाला मानै, कबहीं दोउ पकरि कै आनै ॥५३॥
कबहीं सुख को दुख करि जानै, कबहीं दुख को सुख करि मानै ॥५४

छंद

सन्त के कछु नाहिं बन्धन, एक टेक न राखहीं ।
दोउ एक समान के, कछु झूठ साच न भाखहीं ॥५५॥
जो कहै बचन बनाय चौड़े, नाहिं डेर मन मैं करै ।
हम नाहिं हैं परमातमा, यह बूझि कै कोइ पचि मरै ॥५६

दोहा

दोउ से न्यारे सन्त हैं, हैं दोऊ के बीच ।
पलटू ज्ञान समाधि मैं, ज्यौं रबि प्रति घट बीच ॥५७॥
करै करावै रामजी, और न दूजा कोय ।
पलटू ऐसो समुझ में, मुक्ति भक्त को होय ॥ ५८ ॥

॥ मंगल ॥

१०५

मैं जानौं पिय मोर, पिया नहिं अपना हो ।
छिन मैं कियेहु उजाड़, बसा पुर पटना हो ॥ १ ॥
कब दहुँ गयेउ है निकरि, नाहिं पहिचाना हो ।
सब कोउ छेके ठाढ़, मरम नहिं जाना हो ॥ २ ॥
बैसिहि सकल सरीर, कछू नहिं बिगरा हो ।
कवन सकस यह रहा, कवन बिधि निकरा हो ॥ ३ ॥

दस दरवाजा सून, रूप नहिँ रेखा हो ।
उड़ि गये पंछी पवन, जात किन्ह देखा हो ॥ ४ ॥
नित उठि मंगल होय, छतीसो रागा हो ।
सो मंदिर भये सून, चुनन लागे कागा हो ॥ ५ ॥
जनि कोइ करै गुमान, इहै गति होना हो ।
पलटुदास हरि नाम, लेइ सो सोना हो ॥ ६ ॥

१०६

जनमिउँ दुख की राति, परिउँ भौसागर हो ।
सोइ गइउँ भ्रम माहिँ, कुमति कै आगर हो ॥ १ ॥
सतगुरु दिहिन्हि जगाइ, उठिउँ अकुलाई हो ।
टूटि गइल भ्रम फंद, परम सुख पाई हो ॥ २ ॥
पिय को दिहिन्हि मिलाइ, हिये मोहिँ लीन्हा हो ।
अपनी दासी जानि, परम पद दीन्हा हो ॥ ३ ॥
सत्त सुकृति कै घैला[1], प्रेम कै लेजुर[2] हो ।
पनियाँ भरौँ दफारि[3], माँग भरि सेंदुर हो ॥ ४ ॥
सासु सोरि सुतै गज-ओबरि[4], ननद मोरि अँगना हो ।
हम धन सुतैं धवराहर[5], पिय सँग जगना हो ॥ ५ ॥
झिरिहिरि बहै बयारि, अमी रस ढरकै हो ।
बरमी[6] नौरँगिया कै डारि, चँदन गछ मरकै[7] हो ॥ ६ ॥
तेहि चढ़ि बोलै हंस, सबद सुनि बाउर हो ।
मंगल पलटूदास, जगति कै नाउर[8] हो ॥ ७ ॥

---

(१) घड़ा । (२) रस्सी । (३) पानी को झकझोर कर जिस में खर पतवार हट जाय । (४) इतना बड़ा कमरा जिसके दरवाज़े में से हाथी चला जाय । (५) ऊपर का कोठा । (६) झुकी । (७) मरमराना या लचक कर टूटे टूटे हो जाना । (८) नाऊ जिस के शुभ अवसरों पर मंगला-चरन गाने की चाल कहीं २ है ।

१०७

मातु पिता सुत बंधु, कोऊ नहिँ अपना हो ।
छिन मेँ होत परार,[1] सकल जग सपना हो ॥ १ ॥
माया रूपी नारि, रहत सँग लागी हो ।
हंसा कीन्ह पयान, प्रेत कहि भागी हो ॥ २ ॥
धावन धाये लोग, बेगि रथ साजा हो ।
करहिं अमंगलचार, कहाँ गये राजा हो ॥ ३ ॥
लाइ दिह्यो मुख आगि, काठ बहु भारा हो ।
पुत्र लिहे कर बाँस, सीस तकि मारा हो ॥ ४ ॥
हैँ बैरिन के मूल, तिन्हैँ हित जाना हो ।
पलटुदास गुरु-ज्ञान बूझि अलगाना हो ॥ ५ ॥

॥ सोहर ॥

१०८

अरि अरि सुरति सोहागिनि, पैयाँ तोरी लागौँ हो ।
ललना रूठल कंथ मनावौ, यही बर माँगौँ हो ॥ १ ॥
तुम्हरे मनाये सुरतदेइ, जो पिय आवहिँ हो ।
ललना उजड़ल नगर बसावहु, मोहिँ जुड़ावहु हो ॥ २ ॥
गज मोती चौक पुरावहुँ, कलस धरावहुँ हो ।
ललना ऊँचे चढ़ि बैठावहुँ, पिया जो पावहुँ हो ॥ ३ ॥
तू जनि मोहिँ अगुतावहु[2], नरक जनि नावहु हो ।
ललना कंत से तुमहिँ मिलावहु, तो सुरति कहावहु हो ॥४
बरहँ बरस पिय आये, तो मोहिँ गुहराइनि हो ।
ललना गगन किवारी खोलिनि, हमहिँ मनाइनि हो ॥५॥

(१) पराया, बेगाना । (२) जल्दियाना ।

पलटूदास भ्रम भागै, चित अनुरागै हो ।
ललना मन-बांछित फल होइ, बार नहिं लागै हो ॥६॥

१०६

मोर पिया बसै पुर पाटन, हम घन हियवैं हो ललना ।
अपने पिय की सुद्धि जो पौतिउँ, हम धन कहँवौं हो ललना॥१
अंग अंग भभूति लगौतिउँ, बनै फल खातिउँ हो ललना ।
धरतिउँ जोगिनिया के भेस, पास पिय जातिउँ हो ललना॥२
खोज में निकसिउँ गैलिउँ बिदेसवाँ, पिय भल पायौं हो ललना ।
चरन कँवल सिर नाय, मनहिं समुझायौं हो ललना ॥३॥
गर्भ रहा बिस्वास, पिया मोर जानै हो ललना ।
अचरज खाय सब लोग, कोई नहिं मानै हो ललना ॥४॥
पलटूदास के सोहर, जो कोई गावै हो ललना ।
दसवैं मास इक पुत्र लहै, सुख पावै हो ललना ॥ ५ ॥

॥ वसंत ॥

११०

ए मन भौंरा कित लुभाय, ऋतु बसंत तेरो चल्यौ आय ॥टेक
काया बन तेरो रह्यौ है फूल, अमृत रस हरि नाम मूल ।
चहुँ दिसि आवै बास सुवास, आनँद छः ऋतु बरहौ मास ॥१
भाँति भाँति आवै सुगंध, पाड़र सूँघन जासु अंध[१] ।
अछै वृच्छ सोभित बिसाल, फल लागे तहँ लाल लाल ॥२
भँवरा लालच दुरि बलाय, हरि तजि बाहर मरै धाय ।
घर बैठे तू करु बिलास, मगन रहौ जनि होहु उदास ॥३
एक तो भँवरा भयेउ बूढ़, रूप पिवौ अब ढूँढ़ ढूँढ़ ।
पलटूदास इक अधर अधार, पुहुप बाच करु गुंजमार[२] ॥४॥

(१) हे अंधे भँवरा (अर्थात मन) तू अपने अंतर की सुगंधि को छोड़ कर क्यों बाहर के पाड़र सरीखे दुर्गन्ध फूलों के सूँघने को जाता है। (२) गुंजार।

॥ होली ॥

१११

होरी खेलैाँ मैं पिय के संग, मेरा कोइ क्या करै ॥ टेक ॥

तन भाठो मन बैठि चुवावै, पिय का पियाला नैन भरै ॥१

सासु बुरी घर ननद तुफानी, देखि सुहाग हमार जरै ॥२॥

पलटूदास पिया घर आये, अस्तुति निन्दा भाड़ परै ॥ ३ ॥

॥ हिँडोला ॥

११२

अरे सखि निरखि लेहु, आकास हिँडोलवा हो ॥ टेक ॥

सुभग सुहावन बादर हो, हरि हरि परै बूँदि ।

भीतर कै दर[1] खोलहु हो, बाहर कै लेहु मूँदि ॥ १ ॥

चमकि चमकि उठै बिजुली हो, बादर दौरा जाय ।

कहूं लाल कहुँ पीयर हो, सखि सबद उठै घहराय ॥ २ ॥

ज्योँ ज्योँ पवन झकोरहि हो, त्योँ त्योँ घटा गँभीर ।

पवन परै[2] तब बरसै हो, सखि गगन से निरमल नीर ॥३॥

ससि औ भान तारागन हो, निरमल भयो अकास ।

पलटुदास हम झूलहिँ हो, सखि अपने पिय के पास ॥४॥

॥ बारहमासा ॥

११३

सखी मोरे पिय की खबरि न आई हो ॥ टेक ॥

मास असाढ़ गगन घन गरजै, सब सखि छानि छवाई ।

हौँ बौरी पिया बिनु डोलैाँ, सून मँदिल बिनु साईँ ॥१॥

सावन मेघ गरज मोरि सजनी, कोयल कुहुक सुनाई ।

हौँ बौरी प्रीतम बिनु ब्याकुल, तलफत रैनि बिहाई ॥२॥

(१) किवाड़ । (२) ठहर जाय ।

भादौं गरुव गँभीर सखी री, काली घटा नभ छाई ।
चमकत बिजुलि घोर घन गरजत, सूनि सेज पिय नाहीं ॥३
क्वार मास सब जुड़ि मिलि सखियाँ, झूठे माँगन आईं।
हमरे बलमु परदेस बिलमि रहे, उन बिनु कछु न सुहाई ॥४
कातिक घर घर सब सखियाँ मिलि, रचि रचि भवन बनाई।
मैं पापिनि प्रीतम बिनु सजनी, रोइ रोइ दिवस गँवाई ॥५॥
अगहन अग्र[1] सनेह सबै सखि, पिय सँग गवने जाई ।
देखि देखि मोहिं बिरह बढ़तु है, पिय बिनु जिय अकुलाई ॥६
पूस मास परदेस पियरवा, आवन की सुधि नाहीं ।
काह करौं कित जाउँ सखी री, किन दूतिन बिलमाई ॥७
माघ तुसार[2] परन लागो सजनी, पतियौ नाहिं पठाई ।
ऐसे निपट कठोर कृपामय, निपटै सुधि बिसराई ॥ ८ ॥
फागुन मास आस जब टूटी, जोगिनि होइ कै धाई ।
गैब नगर के गलिन गलिन मँ, पिय पिय सोर मचाई ॥९॥
चैतै चित चिंता अति बाढ़ी, तन मन भसम[3] चढ़ाई ।
निसि बासर मग जोहत सजनी, नैन नीर झरि लाई ॥ १० ॥
वैसाखै बंसी धुनि सुनि सजनी, मन अति तलफ मचाई ।
बिरह भुवंग डस्यौ मोरे हियरे, तन मन की सुधि न रहाई॥ ११
जेठै जब यह गति भइ सजनी, निरखि परी इक झाईं[4] ।
सुन्न मँदिल इक मूरति दरसी, देखत जियरा जुड़ाई ॥ १२ ॥

॥ मिश्रित ॥

११४

धुबिया रहै पियासा जल बिच, लागि जाय मुँह लासा ॥टेक
जल मँ रहै पियै नहिं मूरख, सुंदर जल है खासा ।
अपने घर संदेस पठावै, करै धोबिनि कै आसा ॥ १ ॥

(१) उत्तम । (२) बरफ़ । (३) भभूत । (४) झलक ।

एक रती को सोर लगावै[1], छूटि जाय भर मासा ।
आपै बटै करम की रसरी, अपनै गल कर फाँसा ॥ २ ॥
आपुइ रोवै आपुइ धोवै, आपुइ रहै उदासा ।
दाग पुराना छूटै नाहीं, लोल छिपै की बासा ॥ ३ ॥
साबुन ज्ञान लेइ नहिं मूरख, है संतन के पासा ।
पलटूदास दाग कस छूटै, आछत अन्न उपासा ॥ ४ ॥

११५

हरि को मैं वेगि रिझाओंगी, भजन महँ सुख पाओंगी ॥ टेक
ज्ञान ध्यान कै घुँघुरू बाँधौं, लटकि लटकि गुन गाओंगी ॥१
अँगिया सुमति प्रेम की सारी, नवनि[2] नाथ[3] झमकाओंगी ॥ २ ॥
घँघरा पहिरि बिवेक घेर को, अंजन सोल बनाओंगी ॥३
बाजूबंद अनंद पहिरि कै, सबद से माँग भराओंगी ॥४॥
सुरति सुहागिनि पैयाँ पर लोटै, सूतत कंथ जगाओंगी ॥५
पलटूदास यह खेल खेलि कै, बहुरि नहीं फिर आओंगी ॥६

११६

है कोइ सखिया सयानो, चलै पनिघटवा पानी ॥ टेक ॥
सतगुरु घाट गहिर बड़ सागर, मारग है मोरी जानी ।
लेजुरी सुरति सबद कै चैलन, भरहु तजहु कुल कानी ॥१॥
निहुरि के भरै घयल नहिं फूटै, सो धन प्रेम दिवानी ।
चाँद सुरुज दोउ अंचल सोहैं, बेसर लट अरुझानी ॥ २ ॥
चाल चलै जस मैगर[4] हाथी, आठ पहर मस्तानी ।
पलटूदास झमकि भरि आनी, लोक लाज ना मानी ॥ ३ ॥

---

(१) चिल्लावै । (२) झुकना, दीनता । (३) नथ । (४) मस्त ।

११७

साधो देखि परो क्या गाई, तत्त में तत्त समाई ॥ टेक ॥
कसर रहै तौ कुन्दन नाहीं, खरा भये क्या खोलै ।
बकुला सेती हंस भयो है, पाछिल बोल न बोलै ॥ १ ॥
विष परपंच मिटा भा इस्थिर, मनि गन अजगर सोई ।
जौं लगि छाछ रहै विव माहीं, तौं लगि चुप[1] ना होई ॥२
जौं लगि तोई[2] डोलै बोलै, तौं लगि माया माहीं ।
मगन भये पर अब क्या बोलै, हरि हैं अब हम नाहीं ॥३॥
भूख पियास एकौ नहिं लागै, छूटि गई दुचिताई ।
पलटूदास जो ऐसा जोगी, बोलै कौन बड़ाई ॥ ४ ॥

११८

समुझि देखु मन सानी, पलटू निरगुन बनियाँ ॥ टेक ॥
चारि वेद कै टाट बिछावत, तेहि चढ़ि करत दुकनियाँ ॥१
सत्य सेर मन प्रेम तराजू, नाम कै मारत टेनियाँ[3] ॥ २ ॥
सुरति सबद कै बैल लदाइनि, ज्ञान कै गोंदि[4] लदनियाँ ॥३
सहर जलालपुर मूँड़ मुड़ाइनि, अवध तोरिनि करधनियाँ॥४
पलटूदास सतगुरु बलिहारी, पाइनि भक्ति अमनियाँ ॥५

११६

चाहौ मुक्ति जो हरि कौ सुमिरौ, हम तौ हरि बिसराया हो ॥टेक॥
सुमिरत नाम बहुत दिन बीते, नाहक जनम गँवाया हो ।
मुक्ति विचारी करै खवासी, पिय कौ हम अपनाया हो ॥१

(१) जब तक सब छाछ जल नहीं जाती तब तक घी कड़ाही में बोलता रहता है । (२) पानी । (३) तराजू को अँगुली से चोरी से दबा कर माल कम तौलना । (४) टाट का थैला जिस में जिन्स भर कर लादते हैं ।

साहिब मेरा मुझ को सुमिरै, मैं ना सीस नवावौं हो ।
बैठा रहौं सैाक[1] मैं अपने, केकर दास कहावौं हो ॥ २ ॥
बूझी बात खुला अब परदा, क्योंकर साच छिपावौं हो ।
जैसन देखौं तैसन भाखौं, मैं ना झूठ कहावौं हो ॥ ३ ॥
संका नाहिं करौं काहू की, हम से बड़ कोउ नाहीं हो ।
पलटूदास कवन है दूजा, हमहीं हैं सब माहीं हो ॥ ४ ॥

१२०

खालिक खलक खलक में खालिक, ऐसा अजब जहूरा है ।
हाजी हज्ज हज्ज में हाजी, हाजिर हाल हजूरा है ॥ १ ॥
फल में फूल फूल में फल है, रोसन नबी का नूरा है ।
पलटूदास नजर नजराना, पाया मुरसिद पूरा है ॥ २ ॥

१२१

बैठी तमोलिन बिटिया[2] हो, कतरै बँगला पान ॥ टेक ॥
कहँ नारी तोर नैहरवा हो, कहवाँ ससुरार ॥ १ ॥
काहे कै तोर कतरनी हो, का करत अहार ॥ २ ॥
सरगुन मोर नैहरवा हो, निरगुन ससुरार ॥ ३ ॥
ज्ञान कै हमरी कतरनी हो, सब्द करीला अहार ॥ ४ ॥
पाँच पुत्र हम जाया हो, सो हैं बार कुँवार ॥ ५ ॥
ससुरे गये ससुरवा हो, कहै कुलवंती नार ॥ ६ ॥
पलटुदास निज पूछैं हो, कहु कुसल हमार ॥ ७ ॥
गुरु के चरन रज अंजन हो, लेहु नैन सँभार ॥ ८ ॥
आवागवन नसावै हो, गुरु होवैं दयार ॥ ९ ॥

(१) उमंग । (२) रास्ते में ।

१२२

मत कोइ करो बैराग हो बैराग कठिन है ॥ टेक ॥

जग की आस करै नहिं कबहूँ, पानी पिये नहिं माँगी हो ॥१॥
भूख पियास हरै अरु निद्रा, रहै प्रेम लौ लागी हो ॥ २ ॥
जो कोइ धड़ पर सीस न राखै, जियत रहै तन त्यागी हो ॥३॥
पलटुदास बैराग कठिन है, दाग दाग पर दागी हो ॥ ४ ॥

१२३

गुरू से भेद पुछन को आया ॥ टेक ॥

कौन गुरू से मूँड़ मुँड़ाया, कहवाँ आसन लाया ।
कौन गुरू का सुमिरन कीन्हा, बिरथा जनम गँवाया ॥ १ ॥
अलख पुरुष से मूँड़ मुँड़ाया, गगन मेँ आसन लाया ।
ओं नाम सब ही घट ब्यापै, ता से रगड़ लगाया ॥ २ ॥
दत्तात्रेय आदि के जोगी, चौबिस गुरू बनाया ।
संत जोग एकौ नहिं जाना[1], ता तेँ भटका खाया ॥ ३ ॥
इँगला पिंगला सुखमन नाड़ी, अनहद डंक[2] जगाया ।
त्रिकुटी सुन्न मद्ध के ऊपर, सोहँग सब्द समाया ॥ ४ ॥
जलावंत[3] इक सिंध अगम है, सुखमन सूरत लाया ।
उलट पलट के यह मन गरजै, गगन मँडल घर पाया ॥५॥
चौदह तबक तिहूँ के ऊपर, तहाँ निसान गड़ाया ।
पलटू कैसी अचरज तेरी, अचल साहिबी पाया ॥ ६ ॥

१२४

निंदरिया मोरी बैरिन भई ॥ टेक ॥

की कोइ जागै जोगी भोगी, की राजा की चोर ।
की कोइ जागै संत बिबेकी, लगन राम की ओर ॥ १ ॥
जागे से परलोक बनतु है, सोये बड़ दुख होय ।

(१) संत सतगुरु नहीँ मिले । (२) डंका । (३) जलमई ।

सतगुरु लीन्हे जो जन जागै, करतम करता होय ॥ २ ॥
स्वारथ लीन्हे सब जग जागै, परमारथ जगै न कोय ।
परमारथ को जो जन जागै, भजन बन्दगी होय ॥ ३ ॥
काम क्रोध लीन्हे जो जागै, गये जिन्दगी खोय ।
ज्ञान खरग लिहे पलटू जागै, होनी होय सो होय ॥ ४ ॥

१२५

काहे को लगायो सनेहिया हो,
अब तुरल[1] न जाय ॥ टेक ॥
जब हम रहिनि लरिकवा हो,
पिया आवहि जाय ।
जब हम भइनि सयानी हो,
पिया गये बिदेस ॥ १ ॥
पिय का पठयो सँदेसवा हो,
आये पिय मोर ।
हम धन पैयाँ उठि लागब हो,
जिय भयल भरोस ॥ २ ॥
सोने कि थरियवा जेवना हो,
हम दिहल परोस ।
हम धन बेनियाँ डोलाउब हो,
जँवै पिय मोर ॥ ३ ॥
रतन जड़ित इक भारी हो,
जल भरा अकास ।

(१) तोड़ी ।

मोरे तोरे बिच परमेसुर हो,

कहै पलटूदास ॥ ४ ॥

१२६

जो कोइ राखै कदम फकीरी,

कफनी खुसी की डारै हो ॥ टेक ॥

सादी गमी एक करि जानै,

झूठ कभी ना भाखै हो ।

दुसमन दोस्त एक है दोऊ,

इन्हैं एक घर राखै हो ॥ १ ॥

दावा दुई दूरि होइ जावै,

सो दुरवेस कहावै हो ।

हलुवा घूसा कोऊ चढ़ावै,

हँसि हँसि दोऊ खावै हो ॥ २ ॥

सीस दिहा तब अब क्या रोना,

मनी मान को खोवै हो ।

दम दम याद करै साहिब को,

नेकी दस्त[1] मैं बोवै हो ॥ ३ ॥

दहसति[2] नाहिं करै किसहू की,

जिकिर अपानी खोलै हो ।

पलटू रोसन इहै कमालो,

तनहा[3] होइ जब डोलै हो ॥ ४ ॥

(१) हाथ । (२) भय । (३) अकेला ।

१२७

भेद भरी तन कै सुधि नाहीं,
ऐसी हाल हमारी हो ॥ टेक ॥

पुरुष अलख लखि मन मतवाला,
झुकि झुकि उठत सम्हारी हो ॥ १ ॥

घायल भये नाद के लागे,
मरमा[1] है सबद कटारी हो ॥ २ ॥

टकटक ताकि रही ठगमूरी,
आपा आप बिसारी हो ॥ ३ ॥

सिथिल भई मुख बचन न आवै,
लागि गगन बिच तारी हो ॥ ४ ॥

सखि पलटू अलमस्त दिवानी,
गोबिंदनन्द दुलारी हो ॥ ५ ॥

१२८

अरे बनिजारा रे भइया,
तू मत करु अस ब्यौपार ॥ टेक ॥

इक बनिजारा अलप जुवनियाँ[2],
दुसरे लगतु है जाड़ ।
राति बिराति चलै तोरी बरदी,
लूटि लेइहि कोउ ठाढ़ ॥ १ ॥

(१) मर्म वाली । (२) कम उमर, नौजवान ।

एक तोरि रोवै माइ बहिनियाँ,
दुसरे गाँव के लोग ।
तिसरे रोवै तोरी बारी बियहिया,
घर घर परिगा सोग ॥ २ ॥
आगि लगो वहि घाटे बाटे,
जहवाँ किहेउ पयान ।
छौंकत बरदी लादेहु नायक,
माँग सेँदुर भहरान ॥ ३ ॥
घर बैठे सुख बिलसहु नायक,
मत तू जाहु बिदेस ।
केतिक नायक लादि गये हैं,
काहू न कहा सनेस ॥ ४ ॥
प्रेम को घाट कठिन है नायक,
जो कोइ उहवाँ जाई ।
पलटूदास करौं मैं बिनती,
बहुरि न भवजल आई ॥ ५ ॥

१२९

फिरै इक जोगी नगर भुलाना, चढ़िगा महलै महल दिवाना ॥टेक
ना वह खावै ना वह पीवै, ना वह भिच्छा जाचै[1] ।
ना वह बोलै ना वह डोलै, बिना नचाये नाचै ॥ १ ॥
सुखमन के घर भाटी चूवै, पियै बंक के नाला ।
जब देखो तब प्रेम छका है, जपता अजपा माला ॥ २ ॥

---

(१) माँगै ।

गगन गुफा मैं सिंगी टेरै, जाग्रत के घर जागै ।
तिरबेनी मैं आसन मारै, पारब्रह्म अनुरागै ॥ ३ ॥
सुन्न महँ मौनी होइ बैठै, अनहद तूर बजावै ।
तुरिया चढ़ि गद्गद होइ बोलै, लंबिका सुर लै गावै ॥ ४ ॥
सब्दै सब्द मिलावै जोगी, खुलि गा गगन रखाना[1] ।
पलटूदास कौन अलगावै, बुंद मैं समुँद समाना ॥ ५ ॥

१३०

देखु रे गुरु गम मस्ताना। जानैगा कोइ साधु सयाना ॥टेक
जियतै मरै सोई पहिचानै, गैब नगर सहजै चढ़ि जाना ॥१
इँगला पिंगला चँवर ढुरावै, सुखमन निसु दिन हनत निसाना॥२
तुरिया चढ़ि जब गरजन लागे, छवि देखत सुर भूप लजाना॥३
गुरु गोविंद मासूक मिले हैं, आसिक ह्वै पलटू बौराना ॥४॥

१३१

देखो इक बनियाँ बौराना । ज्ञान की करै दुकाना ॥टेक॥
बेचै अमृत विष सम लागै, गाहक कोऊ न आवै ।
खारी माँगै खाँड़ दिखावै, आपुहि से बगदावै[2] ॥ १ ॥
देइ उधार बिना वादे[3] पर, सब से पूछै लेवो ।
जो लेवै सो खुस होइ जावै, कबहुँ न कहै कि देवो ॥२॥
छिमा तराजू पुरा[4] बाट लै, सब से मीठो बोलै ।
नाम रतन की ढेरी लागी, बिना दाम वह तोलै ॥ ३ ॥
कुंजी सुरत सबद का तारा, जोग जुगति से खोलै ।
पलटूदास सत्त का सौदा, आठ पहर ना डोलै ॥ ४ ॥

(१) रखना=मोखा । (२) भूल मैं डालै । (३) शर्त । (४) पूरा ।

१३२

हम को क्या जरूर वे, साहिब हाल हजूर वे ॥ टेक ॥
गैब तख्त बादसाह भया दिल, बजै अनाहद तूर वे ॥१॥
ना जानौं दहुँ कौन पिलावै, अरस[1] पियाला नूर वे ॥२॥
छिन छिन पल पल कल न परतु है, रोम रोम भरिपूर वे ॥३॥
जगमग जोति छत्र सिर ऊपर, ऐसा अजब जहूर वे ॥ ४ ॥
पलटूदास आस अब किस की, दुरमति भागी दूर वे ॥५॥

१३३

माया तू जगत पियारी वे, हमरे काम की नाहीं ।
द्वारे से दूर हो लंडी[2] रे, पइठु न घर के माहीं ॥ १ ॥
माया आपु खड़ी भइ आगे, नैनन काजर लाये ।
नाचै गावै भाव बतावै, मोतिन माँग भराये ॥ २ ॥
रोवै माया खाय पछारा, तनिक न गाफिल पाऊँ ।
जब देखो तब ज्ञान ध्यान मैं, कैसे मारि गिराऊँ ॥ ३ ॥
ऋद्धि सिद्धि दोउ कनक समाजो, बिस्नु डिगन[3] को भेजा ।
तीन लोक मैं अमल तुम्हारा, यह घर लगै न तेजा[4] ॥४
तू क्या माया मोहिं नचावै, मैं हौं बड़ा नचनियाँ ।
इहवाँ बानिक[5] लगै न तेरी, मैं हौं पलटू बनियाँ ॥ ५ ॥

१३४

संतो बिस्नु उठे रिसियाय, माया किन्ह जोलिया ॥टेक॥
माया को लिया बुलाय, गोद लै पूछन लागे ।
तीन लोक की बात, प्रगट करु मोरे आगे ॥ १ ॥

---

(१) ब्रह्मांड । (२) लौंड़ी । (३) फँसाने या गिराने को । (४) बल, ज़ोर ।
(५) दाँव, छल बल ।

माया रोवन लागि, खोल कर मूँड़ दिखावै ।
दै जूतिन की मार, मोहिं बानिया दुरियावै ॥ २ ॥
दिहा इन्द्र को त्रास[1], अपसरा तुरत पठावो ।
नाना रूप बनाय, जाइ कै तुरत डिगावो ॥ ३ ॥
उतरी अपसरा आय, अवधपुर जहँवाँ बनियाँ ।
सोरहो किये सिंगार, चंद्रमुख मधुर बचनियाँ ॥ ४ ॥
छुद्रघंटिका[2] पायल[2], बाजै रतन जड़ाऊँ ।
ऋतु बसंत की आनी, मोतिन से माँग भराऊँ ॥ ५ ॥
नाचै गावै राग, भाव धै बाँह बतावै ।
बनियाँ लाय समाधि, डिगै ना लाख डिगावै ॥ ६ ॥
क्या तुम भये फकीर, नारि तुम सुंदर बिलसौ ।
सोना रूपा लेहु, माया को जनि तुम तरसौ ॥ ७ ॥
इन्द्र-लोक तुम लेहु, होहु बैकुंठ के राजा ।
ताको हमरी ओर, तुम्हैं हम बहुत निवाजा ॥ ८ ॥
ऋद्धि सिद्धि तुम लेहु, मुक्ति तुम लेहु अघाई ।
तीन लोक मैं फिरै तुही, ना आन दुहाई ॥ ९ ॥
हम सब दाबहिं गोड़, फूलन की सेज बिछाई ।
मानौ बचन हमार, तुम्हैं है राम दुहाई ॥ १० ॥
बनियाँ हँसा ठठाइ, पलक को नाहिं उघारी ।
तुहरे बहुत भतार, रहिउ ना तुही कुआरी ॥ ११ ॥

(१) धमकी । (२) गहनौं के नाम ।

आगि लगौ बैकुंठ, लौंड़ी है मुक्ति हमारी ।
इहाँ से होहु तू दूरि, माया तू भई अनारी ॥ १२ ॥
हम जोगी बेकाम, खसम तुम खोजो मोटा ।
ब्रह्मा बिस्नु महेस, तुम्हारे लायक ढोटा ॥ १३ ॥
हमरे सब्द बिवेक, लगहि चूतर सँ सोँटा ।
आबरूह[1] लै भागु, पकरि के कटिहौं झोँटा ॥ १४ ॥
चली अपसरा हारि, जाय बैकुंठ मेँ भागी ।
ब्रह्मा बिस्नु महेस की रहै, कचहरी लागी ॥ १५ ॥
अपसरा कहै पुकार, सुनो सत बचन हमारा ।
बनियाँ डिगै को नाहिं, उहाँ ना अमल तुम्हारा ॥ १६ ॥
अपना चाहो भला, जाइकै लावहु सेवा ।
उलटि देइ बैकुंठ, बचै ना सुर मुनि देवा ॥ १७ ॥
पलटूदास अपार, पार ना पावै कोई ।
करै अपसरा सोर देवतौ उब्रिन[2] होई ॥ १८ ॥

१२५

माया ठगिनी जग बौराई ॥ टेक ॥

देवतन के घर भई अपसरा, जोगी के घर चेली ।
सुर नर मुनि सब को खाइसि है, है अलमस्त अकेली ॥१
कृस्न कँहै गोपी ह्वै खाइसि, राम कँहै ह्वै सीता ।
महादेव काँ पारबती ह्वै, तोहिं से कोऊ न जीता ॥२॥

---

(१) इज्जत । (२) पार; उद्धार ।

बिस्नु कँहै लछमी ह्वै खाइसि, ब्रह्मा सृष्टि पसारी ।
सिंगी ऋषि को बन में खाइसि, तोहरिनि फिरै दुहाई ॥३॥
दौलत ह्वै तिरलोकै खाइसि, गुरू कँहै ह्वै नारी ।
पलटुदास के द्वार खड़ी रहै, लौंडी भई हमारी ॥४॥

१३६

माया भूत भुताना साधो, आलम[1] सब अभुवाता है ॥टेक॥
बूढ़ा बारा सब अभुवाता, काहू के सुधि नाहीं है ।
घर घर फिरी दुहाई उसकी, सब के घट में वाही है ॥१॥
राजा परजा सब के लागा, सब कोऊ बौराना है ।
इस के मारे सब जग मरिगा, बुढ़वा भूत सयाना है ॥२॥
जोरू बेटा मुलुक खजाना, उस ही की सब छाया है ।
दुइ दल होइ के हाकिम लड़ता, बकता माया माया है ॥३॥
मार के आगे भूत भी नाचै, हादी[2] ने जब दागा है ।
ऐसे भूत को कौन छुड़ावै, हादी के भी लागा है ॥४॥
पलटुदास यह भूत पुराना, तीनि लोक में जागा है ।
हमरे है सतगुरु कै सोंटा, लै के दौरे भागा है ॥५॥

१३७

हम तो बेपरवाही मियाँ वे, हम को अब का चाही ॥१॥
दिल दिल्ली मन तखत आगरा, चलै सबर दे[3] माहीं ॥२॥
ज्ञान ध्यान की फौज हमारी, दफ्तर नाम इलाही ॥३॥
दुनिया दीन दोऊ है तालिब[4], ऐसी है बादसाही ॥४॥
पलटूदास दूरि भइ दूई, सादी गमी कोइ नाहीं ॥५॥

(१) संसार। (२) गुनी, स्याना। (३) के। (४) याचक, मँगता।

१३८

मुस्किल है प्यारे कठिन फ़क़ीरी रिन्दा काम ॥१॥
फ़ाक़ा फकर सबर दिल आवै, धुनि लागी हर जाम[१] ॥२॥
रूखा सूखा गम का टुकड़ा, सुबह मिलै या साम ॥३॥
हक़ हलाल आप से आवै, लेना और हराम ॥४॥
पलटूदास सोई ठहरैगा, मुद्दा हुआ तमाम ॥५॥

१३९

पाप के मोटरी बाम्हन भाई, इन सबही जग को बगदाई[२] १
साइत सोधि के गाँव बेढ़ावैं[३], खेत चढ़ाय के मूड़ कटावैं ॥२॥
रास बर्ग गन मूर को गाड़ि[४], घर के बिटिया चौके राँड़ि ॥३
और सभन को गरह बतावैं, अपने गरह को नाहिं छुड़ावै ॥४
मुक्ति के हेतु इन्हें जग मानै, अपनी मुक्ति के मरम न जानै ५
औरन को कहते कल्यान, दुख माँ आपु रहैं हैरान ॥६॥
दूध पूत औरन को देते, आप जो घर घर भिच्छा लेते ॥७॥
पलटुदास की बात को बूझै, अन्धा होय तेहू को सूझै ॥८॥

१४०

भलि मति हरल तुम्हार पाँड़े बम्हना ॥ टेक ॥
सब जातिन मँ उत्तम तुमहीं, करतब करौ कसाई ।
जीव मारि कै काया पोखौ, तनिकौ दरद न आई ॥१॥
राम नाम सुनि जूड़ी आवै, पूजौ दुर्गा चंडी ।
लम्बा टीका काँध जनेऊ, बकुला जाति पखंडी ॥२॥

---

(५) घड़ी । (१) भरमाया । (२) नाश करावैं । (३) राशि, वर्ग, गण और मूल (जिस से जन्मपत्री को विधि का ज्योतिषी हिसाब करते हैं) क़ायम करके ।

बकरी भेड़ा मछरी खायौ, काहे गाय बराई ।
रुधिर माँस सब एकै पाँड़े, थू[1] तोरी ब्रम्हनाई ॥३॥
सब घट साहिब एकै जानौ, यहि माँ भल है तोरा ।
भगवतगीता बूझि बिचारौ, पलटू करत निहोरा ॥४॥

१४१

कुलुफ कुफर को खोलै मुलने, मुरदा होय के डोलै ॥टेक॥
जो तुम चाहौ भिस्त[2] आपनी खुदी खूब को खोवौ ।
हवा हिरिस को बसि मैं राखौ, रूह पाक को धोवौ ॥१॥
तसबी एक रहै बेदाना, दिल अंदर मैं फेरै ।
पाक मुहम्मद नजर परैगा, दिल गुम्मज मैं हेरै ॥२॥
जाहिर चसम को दूरि करौ तुम, अन्दर घसि के पैठै ।
असमान के बीच रखाना[3] है इक, उस हुजरे[4] मैं बैठै ॥३॥
कीजै फहम फना को लै कै, नूर तजल्ली अपना ।
पलटूदास मकाँ हूहू[5] का, दीद दानिस्तन[6] सुनना ॥४॥

१४२

मुरसिद जात खुदाय की, दरगाह बताया ।
परवर पाक दिगार[7] को, दिल बीच मिलाया ॥१॥
बंदगी दम दम की भरौं, दानिस्त[8] दिखाया ।
तिनुका ओट पहाड़ है, बिन चसम[9] लखाया ॥२॥
कुदरति देख सुभान की, दिल हैरान है मेरा ।
मौजूद रहै वजूद मैं, बिन तसबी फेरा ॥३॥

(१) धिकार । (२) बैकुंठ । (३) रखना=मोखा । (४) कोठरी । (५) वह मकान जहाँ से ओं ओं की धुनि उठती है । (६) चित्त देकर । (७) पाक परवरदिगार या पालने वाला । (८) अनुभव ज्ञान । (९) आँख ।

तख्त चढ़े दुरवेस हैं, बातैं आफरीनी[1] ।
मुअज्जिज[2] हैं असमान मैं, औ साफा सीनी[3] ॥४॥
छत्र फिरै सिर नूर का, सब बुजरुग हारे ।
पलटुदास मिलि खाक मैं, हम खोजि निकारे ॥५॥

१४३

काल आय नियराना है हरि भजो सखी री ॥टेक॥
सीत बात कफ घेरि लेहिंगे, करिहैं प्रान पयाना है ।
तीनिउँ पन धोखे मैं बीते, अब क्या फिरै भुलाना है ॥१
घाट बाट मैं रोकै टोकै, माँगै गुरु-परवाना है ।
पलटूदास होय जब गुरुमुख, तब कुछ मिलै ठिकाना है ॥२

१४४

मैं बलिहारी जाउँ जेहि मुख हरि जस उचरै ॥टेक॥
जातिन नीच होय फिर कुष्टी, सरबरि[4] करै न कोई ।
कोटि कुलीन होय ब्रह्मा सम, ता सम तुलै न कोई ॥१॥
जेकँहै सिव सनकादिक खोजैं, सुर मुनि ध्यान लगावैं ।
सो हरि उनके पीछे पीछे, संख चक्र लिये धावैं ॥२॥
कोटिन तीरथ उनके चरनन, मुक्ति है उनकी चेरी ।
पहुँचत हैं बैकुंठ सोई, पद-रज जै जै केरी ॥३॥
जो सुख हरि घर दुर्लभ देखा, सो उनके घर माहीं ।
पलटूदास संत घर हरि हैं, हरि के घर अब नाहीं ॥४॥

---

(१) प्रशंसा के योग्य । (२) प्रतिष्ठित । (३) शुद्ध हृदय । (४) बराबरी ।

१४५

सिर धुनि धुनि पछताउँ, देखि जग रोता हो ।
बिषै लहर गै सोय माया जग जीती हो ॥ १ ॥
माया रूपी जाल सकल जग आझा[१] हो ।
ज्ञानी जोगी जती परे तेहिं माँझा हो ॥ २ ॥
बूड़ैं औ उतरायँ माया के सागर हो ।
कोउ नहिं सकै बचाय माया नट नागर हो ॥ ३ ॥
तिरगुन फाँसी हाथ ठगिनि यह माया हो ।
सुर मुनि देइ गिराय तनिक नहिं दाया हो ॥ ४ ॥
काम क्रोध की लहर सकल जग जागै हो ।
चिंता डसै सरीर नींद नहिं लागै हो ॥ ५ ॥
चतुर सकल संसार माया महँ राचा हो ।
अहमक पलटूदास भागि कै बाचा हो ॥ ६ ॥

१४६

हरि चरनन चित लाओ हो सरिहैं सब काज ॥टेक॥
काल बली सिर ऊपर हो तीतर को बाज ।
चंगुल लर चिचिऐहैा हो जब मिलै मिजाज ॥१॥
भजन बिना का नर तन हो रैयत बिनु राज ।
बिना पिता कै बालक हो रोवै बिनु साज[२] ॥२॥
देव पित्र उपवासी[३] हो परि है जम गाज[४] ।
बहुत पुरुष कै नारी हो बिस्वै[५] नहिं लाज ॥३॥

(१) फँसा। (२) विना ताल स्वर के। (३) उपासना या पूजा करनेवाले।
(४) बिजली। (५) कसबी।

काम क्रोध बिनु मारे हो का दैहौ सिर ताज ।
पलटुदास धिक जीवन हो सब झूँठ समाज ॥४॥

१४७

काटौँ फन्दा करम का जो होवै मेरा ।
उलटि लिखौँ तेहि भाल[1] मेँ कोइ सकै न फेरा ॥१॥
जा खोजन ब्रह्मा भुले सुर मुनि बहुतेरा ।
सो पद दैहौँ ताहि को जिन मो को हेरा ॥२॥
मरन जियन मेँ सब परा दुख सहत घनेरा ।
करम के बसि फाँसी फँसे मुए गुरु औ चेरा ॥३॥
भरम छुड़ावौँ ताहि को आवागवन निबेरा ।
सत्त लोक पहुँचाय को नहिँ लावौँ देरा ॥४॥
अमर लोक बैठाय के तहवाँ द्यौँ डेरा ।
सुखी करौँ तेहि जन्म को जो पलटू केरा[2] ॥५॥

१४८

मत कोउ गहो वह पद निरबान ॥ टेक ॥
घर के हित सब बैरी होइहैँ, गुनि गुनि बेद पुरान ॥ १ ॥
अलख नाम सोई से हित करु, राम नाम गलतान[3] ॥२॥
राँध परोसिन गारी दैहैँ, लोग कहैँ बौरान ॥ ३ ॥
सतगुरु साहिब मिले मसूका[4], आसिक है पलटू अलगान ॥४

१४९

कौन भक्ति तोरी करौँ राम मैँ, कौन भक्ति तोरी करौँ ।
तुझ मैँ महैँ तुही है मुझ मैँ, कौन ध्यान लै धरौँ ॥१॥

(१) माथा । (२) का । (३) मस्त । (४) प्रीतम ।

मरौं नहीं मारे काहू के, नाहिं जराये जरौं ।
कैसन पाप पुन्न है कैसन, सरग नरक नहिं डेरौं ॥२॥
तीरथ बर्त ध्यान नहिं पूजा, बिना परिस्रम तरौं ।
पलटू कहै सुनो भाइ साधो, सन्त चरन सिर धरौं ॥३॥

१५०

आई मुझ लेन को दूती । पिया के सेज मैं सूती ॥१॥
उठी मैं नींद की माती । मिला मोहिं सेज का घाती ॥२॥
कथौं क्या अकथ की कथनी । मथौं मैं तत्त की मथनी ॥३॥
अधर मैं चाँदनी छिटकी । सुरत की डोरि लै लटकी ॥४॥
पलटू तहँ सुनत बनि आवै । खुसी मैं कौन बिलगावै ॥५॥

१५१

मौनी मुख से बोल, मौन मनै मन रहु ॥ टेक ॥
उनमुनि मुद्रा ध्यान लगावै, मन मैं उलटि समावै ।
निरबिकार निरबैर जगत से, सो मौनी मोहिं भावै ॥१॥
अजपा जाप जपै बिनु रसना, सुन्य मैं तुही अकेला ।
मौनी मन को राखु निरंतर, तुहीं गुरू तुहिं चेला ॥२॥
भूख लगे पर सैन बतावै, प्यास लगे पर पानी ।
मन तरसत है बोलै कारन, कौन भक्ति तुम जानी ॥३॥
पारब्रह्म पुरुसोत्तम स्वामी, सब घट ब्यापक सोई ।
पलटू कहै सुनो हो मौनी, मौन काहि से होई ॥४॥

१५२

कोइ कोइ संत सुजान, जानै बस्तु आपनी ॥ टेक ॥
जिन जाना तिन हीं सुख पाया, और सबै हैरान ॥१॥

संग्रह त्याग नहीं कुछ एकौ, नहीं मान अपमान ॥२॥
सम्पति बिपति अस्तुती निंदा, ना कुछ लाभ न हान ॥३
पलटुदास खोजत सब मरि गा, परा रहै चौगान[१] ॥४॥

१५३

गाफिल मैं क्या सोवता, सुन मुरख अनारी ।
साहिब से दिल लाय ले, यह अरज हमारी ॥ १ ॥
जोरू बेटा कौन का, किस का है भाई ।
मुलुक खजाना कौन का, कोउ संग न जाई ॥ २ ॥
हाथी घोड़ा तंबुवा[२], आवै केहि कामा ।
फूलन सेज बिछावते, फिर गोर[३] मुकामा ॥ ३ ॥
आलम[४] का पातसा हुआ, तूही कुल कुल्ला ।
यह सब ख्वाब की लहर है, दरियाव क बुल्ला ॥ ४ ॥
पाव घरी मैं कूच है, क्या देरी लावै ।
पलटू की सतराम[५] है, तोहि काल बुलावै ॥ ५ ॥

१५४

मन बच कर्म भजौ करतार । भजन बिना नहिं पैहौ पार ॥१
नहिं मोरे मात पिता सुत नार । माया मोह झूँठ घरबार ॥२
ना हम केहु के कोउ न हमार । झूँठी प्रीति करै संसार ॥३॥
नर्क सर्ग नहिं वार न पार । बिनु सतगुरु कौन निस्तार ॥४
मन के जीते पलटू जीति । अजर जरै तो निबहै प्रीति ॥५

(१) मैदान । (२) तंबू । (३) क़बर । (४) संसार । (५) नमस्कार ।

१५५

केहि बिधि राम नाम अनुरागै, दिल की भरम न भागै ॥टेक॥
बिनु खाये चित चैन न होवै, खाये आलस लागै।
बूझि बिचारि दोऊ हम देखा, मन माया नहिं त्यागै ॥१॥
रैयत एक पाँच ठकुराई, दस दिसि है मैआसा[१]।
रजो तमो गुन खरे सिपाही, करहिं भवन मैं बासा ॥२॥
पाप पुन्य मिलि करहिं दिवानी, नगरी अदल न होई।
दिवस चोर घर मूसन लागे, माल-धनी गा सोई ॥ ३ ॥
इतने बैरी रहैं जीव के, उलटि पवन जब जागै।
गुरु का ज्ञान बान लै पहुँचै, ब्रह्म अगिनि दै दागै ॥ ४ ॥
काया घेरि अमल करु जोरा, धर्म द्वार मन माँगै।
पलटू दास मूल धै मारै, पुलकि पुलकि तब पागै ॥ ५ ॥

१५६

सबद सबद सब कहत है, क्या सबद कहाई।
केतिक ब्रह्मा लिखि गये, सो हम हीं भाई ॥ १ ॥
एक जोति बादसाह भइ, तीन्युँ लोक पसारा।
तेहि को मारि गिराइया, सिर छत्र हमारा ॥ २ ॥
बहुत समाधी सिव थके, वहँ पवन न पैसा[२]।
केतिक जुग परलै गये, तब के हम बैसा ॥ ३ ॥
चाँद सुरुज एकै नहीं, धरती नभ साता।
राम कृस्न कोटिन मुए, कहूँ तब की बाता ॥ ४ ॥

(१) ठग। (२) घुसा।

उपजत बिनसत सब गया, घिस चारि अठैसा[1] ।
सो सब पलटू देखिया, हम जैसे क तैसा ॥ ५ ॥

१५७

जिसी से लगन है लागी, उसी से काम है मेरा ।
डेरौंगी नाहिं डेर जग को, हँसैगा लोग बहुतेरा ॥ १ ॥
नबन का सोक है मेरा, घुँघट को खोलि डालौंगी ।
सीस लै धरौंगी आगे, सजन के मनै मानौंगी ॥ २ ॥
अधर गति खूब लाओंगी, धरौंगी ज्ञान की बाजी ।
परैगा दाँव जब मेरा, सजन को करौंगी राजी ॥ ३ ॥
नैन भरि बदन[2] को देखा, पलटू असमान को खोला ।
जान कुरबान के सदके, सजन तब हाँसि कै बोला ॥४॥

(१) २०+४+२८=५२, अर्थात् बावन अक्षर के फेर में। (२) चिहरा।

साखी

॥ गुरुदेव ॥

संत संत सब बड़े हैं, पलटू कोऊ न छोट।
आतम-दरसी मिहीं है, और चाउर सब मोट ॥ १ ॥

पलटू ऐना[1] संत हैं, सब देखै तेहि माहिं।
टेढ़ सोझ मुँह आपना, ऐना टेढ़ा नाहिं ॥ २ ॥

वहि देवा को पूजिये, सब देवन के देव।
पलटू चाहै भक्ति जो, सतगुरु अपना सेव ॥ ३ ॥

सतगुरु केरे सबद की, लागी मन में चोट।
पलटू रन में बचि गया, कादिर[2] ही की ओट ॥४॥

माहातम जानै नहीं, मेंड़की गंगा बीच।
पलटू सबद लगै नहीं, कतनौ रहै नगीच ॥५॥

पलटू सतगुरु सबद की, तनिक न करै विचार।
नाव मिली केवट नहीं, कैसे उतरै पार ॥ ६ ॥

॥ नाम ॥

जप तप तीरथ बर्त है, जोगी जोग अचार।
पलटू नाम भजे बिना, कोउ न उतरै पार ॥ ७ ॥

पलटू जप तप के किहे, सरै न एकौ काज।
भवसागर के तरन को, सतगुरु नाम जहाज ॥ ८ ।

जड़ि बूटी के खोजते, गई सुध्याई[3] खोय।
पलटू पारस नाम का, मनै रसायन होय ॥ ९ ।

(१) दर्पन। (२) समरथ। (३) शुद्धता।

॥ चितावनी ॥

पलटू यहि संसार मैँ, कोऊ नाहीं होत।
सोऊ बैरी होत है, जा को दीजै प्रीत ॥१०॥

पलटू नर तन पाइ कै, मूरख भजै न राम।
कोऊ ना सँग जायगा, सुत दारा धन धाम ॥११॥

बैद धनंतर मरि गया, पलटू अमर न कोय।
सुर नर मुनि जोगी जती, सबै काल बसि होय ॥१२॥

पलटू पल मैँ कूच है, क्या लावो बड़ी देर।
अब की बार जो चूकहू, फिर चौरासी फेर ॥१३॥

बजा नगारा कूच का, लदा न एकौ ऊँट।
पलटू तलबी अस भई, तन भी गया है छूट ॥१४॥

जो दिन गया सो जान दे, मूरख अजहूँ चेत।
कहता पलटूदास है, करिले हरि से हेत ॥१५॥

पलटू नर तन पाइ कै, भजै नहीं करतार।
जमपुर बाँधे जाहुगे, कहौँ पुकार पुकार ॥१६॥

पलटू नर तन जातु है, सुंदर सुभग सरीर।
सेवा कीजै साध की, भजि लीजै रघुबीर ॥१७॥

पलटू सिष्य जो कीजिये, लीजै बूझ बिचार।
बिन बूझे सिष करौगे, परिहै तुम पर भार ॥१८॥

दिना चारि का जीवना, का तुम करौ गुमान।
पलटू मिलिहै खाक मैँ, घोड़ा बाज[1] निसान ॥१९॥

---

(१) बाजा।

पलटू हरि जस गाइ ले, यही तुम्हारे साथ ।
बहता पानी जातु है, धोउ सिताबी[१] हाथ ॥२०॥

॥ प्रेम ॥

राम नाम जेहि मुखन तेँ, पलटू होय प्रकास ।
तिन के पद बंदन करौँ, वो साहिब मैँ दास ॥२१॥

तन मन धन जेहि राम पर, कै दीन्होँ बकसीस[२] ।
पलटू तिन के चरन पर, मैँ अरपत हैाँ सीस ॥२२॥

राम नाम जेहि उच्चरै, तेहि मुख देहुँ कपूर ।
पलटू तिन के नफर[३] की, पनहीँ का मैँ धूर ॥२३॥

पलटू ऐसी प्रीति करु, ज्योँ मजीठ के। रंग ।
टूक टूक कपड़ा उड़ै, रंग न छोड़ै संग ॥२४॥

आठ पहर जो छकि रहै, मस्त अपाने हाल ।
पलटू उन से सब डेरै, वो साहिब के लाल ॥२५॥

करम जनेऊ तोड़ि कै, भरम किया छयकार[४] ।
जेहि गोबिँद[५] गोबिँद[६] मिले, थूक दिया संसार ॥२६॥

पलटू सीताराम से, हम तो किहे हैँ प्रीति ।
देखि देखि सब जरत हैँ, कैान भक्त की रीति ॥२७॥

पलटू बाजी लाइहैाँ, दोऊ बिधि से राम ।
जो मैँ हारैाँ राम के।, जो जीतैाँ तो राम[७] ॥२८॥

---

(१) जल्द । (२) यहाँ "भैँट" का अर्थ है । (३) सेवक । (४) नाश । (५) पलटू साहिब के गुरू का नाम । (६) ईश्वर । (७) जो हारूँ तो मैँ राम का हुआ और जो जीतूँ तो राम मेरे हुए ।

पलटू हम से राम से, ऐसो भा ब्यौहार।
कोउ कितनौ चुगली करै, सुनै न बात[1] हमार ॥२९॥
पलटू जस मैं राम का, वैसे राम हमार।
जा की जैसी भावना, ता से तस ब्यौहार ॥३०॥

॥ बिश्वास ॥

मनसा बाचा कर्मना, जिन को है बिस्वास।
पलटू हरि पर रहत हैं, तिन्ह के पलटू दास ॥३१॥
पलटू संसय छूटि गे, मिलिया पूरा यार।
मगन आपने ख्याल मैं, भाड़ पड़ै संसार ॥३२॥
ज्यौं ज्यौं रूठै जगत सब, मोर होय कल्यान।
पलटू बार न बाँकिहै, जो सिर पर भगवान ॥३३॥
संत बचन जुग जुग अचल, जो आवै बिस्वास।
बिस्वास भये पर ना मिलै, तौ झूठा पलटूदास ॥३४॥
पलटू संत के बचन को, ख्याल करै ना कोइ।
टुक मन मैं निस्चै करै, होइ होइ पै होइ ॥३५॥
पलटू लिखा नसीब का, संत देत हैं फेर।
साच नहीं दिल आपना, ता से लागै देर ॥३६॥

॥ सूरमा ॥

धुजा फरक्कै सुन्य मैं, अनहद गड़ा निसान।
पलटू जूझा खेत पर, लगा जिकर[2] का बान ॥३७॥
लगा जिकर का बान है, फिकर भई छयकार।
पुरजे पुरजे उड़ि गया, पलटू जीति हमार ॥३८॥

---

(१) शिकायत। (२) सुमिरन।

नौबत बाजै ज्ञान की, सुन्य धुजा फहराय।
गगन निसाना मारि कै, पलटू जीते जाय ॥३९॥

बखतर पहिरे प्रेम का, घोड़ा है गुरुज्ञान।
पलटू सुरति कमान लै, जीति चले मैदान ॥४०॥

दसो दिसा मुरचा किहा, बाती दिहा लगाय।
काया गढ़ मैं पैसि[1] कै, पलटू लिहा छुड़ाय ॥४१॥

पलटू कफनी बाँधि कै, खोंचैा सुरति कमान।
संत चढ़े मैदान पर, तरकस बाँधे ज्ञान ॥४२॥

सोई सिपाही मरद है, जग मैं पलटूदास।
मन मारै सिर गिरि पड़ै, तन की करै न आस ॥४३॥

सिर पर कफनी बाँधि कै, आसिक कब्र खोदाव।
पलटू मेरे घर महैं, तब कोउ राखै पाँव ॥४४॥

॥ पतिब्रता ॥

जो पिव चाहै सुन्दरी, मन मैदा करु पीस।
पतिबरता पलटू भई, बँदो झलकै सीस ॥४५॥

॥ विनय ॥

तुम तजि दीनानाथ जी, करै कौन की आस।
पलटू जो दूसर करै, तो होइ दास की हाँस ॥४६॥

ना मैं किया न करि सकैाँ, साहिब करता मोर।
करत करावत आपु है, पलटू पलटू सोर ॥४७॥

पलटू तेरी साहिबी, जीव न पावै दुक्ख।
अदल होय बैकुंठ मैं, सब कोइ पावै सुक्ख ॥४८॥

---

(१) घस कर।

॥ भक्त जन ॥

जैसे काठ मैं अगिन है, फूल मैं है ज्यौं बास ।
हरि जन मैं हरि रहत है, ऐसे पलटूदास ॥४९॥
मिंहदी मैं लाली रहै, दूध माहिं घिव होय ।
पलटू तैसे संत हैं, हरि बिन रहैं न कोय ॥५०॥
छोड़ै जग की आस को, काम क्रोध मिटि जाय ।
पलटू ऐसे दास को, देखत लोग डेराय ॥५१॥
अस्तुति निन्दा कोउ करै, लगै न तेहि के साथ ।
पलटू ऐसे दास के, सब कोइ नावै माथ ॥५२॥
आठ पहर लागी रहै, भजन तेल की धार ।
पलटू ऐसे दास को, कोउ न पावै पार ॥५३॥
सरबरि[1] कबहुँ न कीजिये, सब से रहिये हार ।
पलटू ऐसे दास को, डेरिये बारम्बार ॥५४॥
पलटू हरिजन मिलन को, चलि जइये इक धाप ।
हरि जन आये घर महँ, तो आये हरि आप[2] ॥५५॥
दुष्ट मित्र सब एक[3] है, ज्यौं कंचन त्यौं काँच ।
पलटू ऐसे दास को, सुपने लगै न आँच ॥५६॥
ना जीने की खुसी है, पलटू मुए न सोच ।
ना काहू से दुष्टता, ना काहू से रोच ॥५७॥

---

(१) बराबरी । (२) एक लिपि मैं "हरि आप" की जगह "हरि के बाप" है । (३) समान ।

काम क्रोध जिन के नहीँ, लगै न भूख पियास।
पलटू उनके दरस से, होत पाप को नास ॥५८॥
नरक सरग से जुदा है, नहीँ साध आसाध।
ना जानैँ मैँ कौन हूँ, पलटू सहज समाध ॥५९॥

॥ साध ॥

खोजत खोजत मरि गये, तीरथ बेद पुरान।
पलटू सूझत है नहीँ, भेष मैँ है भगवान ॥६०॥
साध परखिये रहनि मैँ, चोर परखिये रात।
पलटू सोना कसे मैँ, झूठ परखिये बात ॥६१॥
बृच्छा बड़ परस्वारथी, फरै और के काज।
भवसागर के तरन को, पलटू संत जहाज ॥६२॥
साध हमारी आतमा, हम साधन के दास।
पलटू जो दोइति[1] करै, होय नरक मैँ बास ॥६३॥
पलटू तीरथ को चला, बीचे मिलि गे संत।
एक मुक्ति के खोजते, मिलि गइ मुक्ति अनंत ॥६४॥
पलटू तीरथ के गये, बड़ा होत अपराध।
तीरथ मैँ फल एक है, दरस देत हैँ साध ॥६५॥
जिन देखा सो बावला, को अब कहै सँदेस।
दीन दुनो दोउ भूलिया, पलटू सो दुरवेस ॥६६॥

---

(१) दुभाँता।

तड़पै बिजुली गगन मैं, कलस[1] जात है फूटि ।
पलटू संत के नाँव से, पाप जात है छूटि ॥६७॥

की तौ हरि चरचा महैं, की तौ रहै इकंत ।
ऐसी रहनी जो रहै, पलटू सोई संत ॥६८॥

साधु वचन साचा सदा, जो दिल साचा होय ।
पलटू गाँठि मैं बाँधिये, खाली परै न कोय ॥६९॥

टुक मन मैं बिस्वास करु, होय होय पै होय ।
पलटू संत औ अगिन जल, छोट कहै मत कोय ॥७०॥

पलटू संत औ अगिन जल, छोट कहै मत कोय ।
जो चाहैं सोई करैं, उन से सब कुछ होय ॥७१॥

पलटू चाहैं सो करैं, उन से सब कुछ होय ।
राम का मिलना सहज है, संत मिला जो होय ॥७२॥

राम का मिलना सहज है, संत का मिलना दूरि ।
पलटू संत के मिले बिनु, राम से परै न पूरि ॥७३॥

काम क्रोध तो है नहीं, नहीं लोभ नहिं मोह ।
पलटू जो है सोई है, नहीं हेत नहिं द्रोह ॥७४॥

ज्योँ फुलेल त्योँ राख है, ज्यौं घास त्यौं पान ।
पलटू संग्रह त्याग नहिं, सो जोगी परमान ॥७५॥

खोजत खोजत मरि गये, तीरथ बेद पुरान ।
पलटू सूझै है नहीं, भेष महैं भगवान ॥७६॥

---

(१) घड़ा ।

॥ पाखंडी ॥

पलटू निकसे त्यागि कै, फिरि माया को ठाट ।
धोबी को गदहा भयो, ना घर को ना घाट ॥७७॥

पलटू मन मूआ नहीं, चले जगत को त्याग ।
ऊपर धोये का भया, जो भीतर रहि गा दाग ॥७८॥

घर छोड़े बैराग मैं, फिरि घर छावै जाय ।
पलटू आइ के सरन मैं, तनिकौ नाहिं लजाय ॥७९॥

भेष बनावै भक्त का, नाहिं राम से नेह ।
पलटू पर-धन हरन को, बिस्वा[1] बेचै देह ॥८०॥

पलटू जटा रखाय सिर, तन मैं लाये राख ।
कहत फिरैं हम जोगी, लरिका दाबे काँख ॥८१॥

॥ सतसंग ॥

संगति ऐसी कीजिये, जहवाँ उपजै ज्ञान ।
पलटू तहाँ न बैठिये, घर की होय जियान[2] ॥८२॥

सतसंगति मैं जाइ कै, मन को कीजै सुद्ध ।
पलटू उहाँ न जाइये, जहवाँ उपजि कुबुद्ध ॥८३॥

॥ उपदेश ॥

पलटू गुनना छोड़ि दे, चहै जो आतम सुक्ख ।
संसय सोइ संसार है, जरा मरन को दुक्ख ॥८४॥

पलटू सीताराम से, लगी रहै वह रट्ट ।
तनिक न पलक बिसारिये, चित्त परै की पट्ट ॥८५॥

---

(१) वेश्या, पतुरिया। (२) हानि ।

तरकस बाँधे तीन ठौ, पलटू हरि के लाग।
इन तीनहुँ को नाम है, भक्ति ज्ञान बैराग ॥८६॥

भक्ति ज्ञान बैराग से, तीर निकारा तीन।
पलटू इन को मारिये, इक दुनिया इक दीन ॥८७॥

लोभ मोह अहंकार तजि, काम क्रोध सब खोय।
पलटू इतने कसर हैं, नाम हमारा होय ॥८८॥

बिना पंथ के चले से, पंथ न पूछै कोय।
पलटू बिन साधन किहे, सिद्ध कहाँ से होय ॥८९॥

सीस नवावै संत को, सीस बखानौं सोय।
पलटू जे सिर ना नवै, बेहतर कद्दू होय ॥९०॥

सुख के सागर राम हैं, दुख के भंजनहार।
राम चरन तजिये नहीं, भजिये बारंबार ॥९१॥

उदर बराबर खाइ ले, पलटू लगै न दाग।
बासी धरै चकोर जो, पर मैं लागै आग ॥९२॥

पलटू पलटू क्या करै, मन को डारै धोय।
काम क्रोध को मारि कै, सोई पलटू होय ॥९३॥

सुनि लो पलटू भेद यह, हँसि बोले भगवान।
दुख के भीतर मुक्ति है, सुख मैं नरक निदान ॥९४॥

पलटू जननी से कहै, यही हमारी सीख।
सकटा[1] पुत्र न राखिये, जनमत दीजै बीख[2] ॥९५॥

(१) अभक्त। (२) बिष; ज़हर।

पलटू संत जो कहि गये, सोई बात है ठीक।
बचन संत के नहिं टरै, ज्यों गाड़ी की लीक ॥९६॥

मन से माया त्यागि दे, चरनन लागी आय।
पलटू चेरी संत की, अंत कहाँ को जाय ॥९७॥

पंडित ज्ञानी चातुरा, इन से खेलौ दूर।
एक साच हिरदे बसै, पलटू मिलै जरूर ॥९८॥

मरते मरते सब मरे, मरै न जाना कोय।
पलटू जो जियतै मरै, सहज परायन[1] होय ॥९९॥

सब से नीचा होइ रहु, तजि विवाद को तीर[2]।
पलटू ऐसे दास का, कोऊ न दामन-गीर[3] ॥१००॥

पलटू का घर अगम है, कोऊ न पावै पार।
जेकरे बड़ी पियास है, सिर को धरै उतार ॥१०१॥

बिन खोजे से ना मिलै, लाख करै जो कोय।
पलटू दूध से दही भा, मथिबे से घिव होय ॥१०२॥

पलटू पलक न भूलिये, इतना काम जरूर।
खामिंद कब गोहरावही, चाकर रहै हजूर ॥१०३॥

आठ पहर चौंसठ घरी, पलटू परै न भोर[4]।
का जानी केहि औसरै, साहिब ताकै मोर ॥१०४॥

पलटू सीताराम से, साची करिये प्रीति।
अपनी ओर निबाहिये, हारि परै की जीति ॥१०५॥

---

(१) पार। (२) निकटता, संगत। (३) पल्ला पकड़ने वाला। (४) भूल।

गारो आई एक से, पलटे भई अनेक।
जो पलटू पलटै नहीं, रहै एक की एक ॥१०६॥

जल पषान के पूजते, सरा न एकौ काम।
पलटू तन करु देहरा, मन करु सालिगराम ॥१०७॥

पलटू नेरे साच के, झूठे से है दूर।
दिल मेँ आवै साच जो, साहिब हाल हजूर ॥१०८॥

पलटू यह साची कहै, अपने मन को फेर।
तुझे पराई क्या परी, अपनो ओर निबेर ॥१०९॥

कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर।
समय पाय तरवर फरै, केतिक सींचो नीर ॥११०॥

बृच्छा फरै न आप को, नदी न अँचवै नीर।
पर स्वारथ के कारने, संतन धरैँ सरीर ॥१११॥

ज्ञान देय मूरख कँहै, पलटू करै बिबाद।
बाँदर को आदी दिया, कछु ना कहै सवाद ॥११२॥

॥ मन ॥

मन हस्ती मन लोमड़ी, मनै काग मन सेर।
पलटुदास साची कहै, मन के इतने फेर ॥११३॥

॥ मान ॥

बड़े बड़ाई मेँ भुले, छोटे हैँ सिरदार।
पलटू मीठो कूप जल, समुँद पड़ा है खार ॥११४॥

सब से बड़ा समुद्र है, पानी हैगा खारि।
पलटू खारी जानि कै, लीन्हाँ रतन निकारि ॥११५॥

पलटू यह मन अधम है, चोरी से बड़ चोर।
गुन तजि औगुन गहतु है, तातें बड़ा कठोर ॥११६॥
कहत कहत हम मरि गये, पलटू बारम्बार।
जग मूरख माने नहीं, पड़ै आप से भाड़ ॥११७॥

॥ दुष्ट और कपटी ॥

पलटू मैं रोवन लगा, जरी जगत की रीति।
जहँ देखो तहँ कपट है, का से कीजै प्रीति ॥११८॥
मुँह मीठो भीतर कपट, तहाँ न मेरो बास।
काहू से दिल ना मिलै, तो पलटू फिरै उदास ॥११९॥
पलटू पाँव न दीजिये, खोटा यह संसार।
हीताई[1] करि मिलत है, पेट महैं तरवार ॥१२०॥
पलटू पाँव न दीजिये, यह जग बुरी बलाय।
लिहे कतरनी काँख मैं, करै मित्रता धाय ॥१२१॥
साहिब के दरबार मैं, क्या झूठे का काम।
पलटू दोनों ना मिलै, कामी और अकाम ॥१२२॥
हिरदे मैं तो कुटिल है, बोलै बचन रसाल।
पलटू वह केहि काम का, ज्यों नारुन फल लाल ॥१२३॥
अधम अधमई ना तजै, हरदी तजै न रंग।
कहता पलटूदास है, (चहे) कोटि करै सतसंग ॥१२४॥
सतगुरु बपुरा क्या करै, चेला करै न होस।
पलटू भीजै मोम ना, जल को दीजै दोस ॥१२५॥

(१) मित्र बन कर।

ज्ञान धनुष सतगुरु लिहे, सब्द चलावै बान।
पलटू तिल भर ना धसै, जियतै मया पषान ॥१२६॥

॥ कामिनी ॥

मुए सिंह की खाल को, हस्ती देखि डेराय।
असिउ[1] बरस की बूढ़ि को, पलटू ना पतियाय ॥१२७॥
असिउ बरस की नारि को, पलटू ना पतियाय।
जियत निकोवै[2] तत्तु को, मुए नरक लै जाय ॥१२८॥
खरबूजा संसार है, नारी छूरी बैन।
पलटू पंजा सेर का, यों नारी का नैन ॥१२९॥
माया ठगिनी जग ठगा, इकहैं[3] ठगा न कोय।
पलटू इकहैं सो ठगै, (जो) साचा भक्ता होय ॥१३०॥

॥ जल पाषान पूजन—तीर्थ व्रत ॥

जल पषान बोलै नहीं, ना कछु पिवै न खाय।
पलटू पूजै संत को, सब तीरथ तरि जाय॥१३१॥
सब तीरथ मैं खोजिया, गहरी बुड़की मार।
पलटू जल के बीच मैं, किन पाया करतार ॥१३२॥
पलटू जहँवाँ दो अमल, रैयत होय उजाड़।
इक घर मैं दस देवता, क्योंकर बसै बजार ॥१३३॥

॥ ब्राह्मन ॥

पलटू बाम्हन है बड़ा, जो सुमिरै भगवान।
बिना भजन भगवान के, बाम्हन ढेढ़[4] समान ॥१३४॥

---

(१) अस्सी ह्र। (२) निचोड़ ले। (३) उसको। (४) सुअर।

सात दीप नौ खंड मेँ, देख्यो तत्तु निचोय।
साध का बैरी कोइ नहीँ, इक बाम्हन होय तो होय॥१३५

सकठा बाम्हन मछखवा, ताहि न दीजै दान।
इक कुल खोवै आपनो, (दूजे) संग लिये जजमान॥१३६॥

सकठा बाम्हन ना तरै, भक्ता तरै चमार।
राम भक्ति आवे नहीँ, पलटू गये खुवार॥१३७॥

॥ महंत ॥

पलटू कीन्हो दंडवत, वै बोले कछु नाहिँ।
भगत जो बनै महंथ से, नरक परै को जाहि॥१३८॥

पलटू माया पाइ कै, फूलि के भये महंथ।
मान बड़ाई मेँ मुए, भूलि गये सत पंथ॥१३९॥

गोड़ धरावैँ संत से, माया के महमंत।
पलटू बिना बिबेक के, नरकै गये महंत॥१४०॥

॥ मिश्रित ॥

हिन्दू पूजै देवखरा, मुसलमान महजोद।
पलटू पूजै बोलता, जो खाय दीद बरदीद॥१४१॥

पलटू अपने भेद से, कारन पैदा होय।
जरि कै बन ह्वैगे भसम, आगि न लावै कोय॥१४२॥

चारि बरन को मेटि कै, भक्ति चलाया मूल।
गुरु गोबिँद के बाग मेँ, पलटू फूला फूल॥१४३॥

हद अनहद दोऊ गये, निरभय पद है गाढ़।
निरभय पद के बीच मेँ, पलटू देखा ठाढ़॥१४४॥

सुख मैँ सेवा गुरू की, करते हैँ सब कोय।
पलटू सेवै बिपति मैँ, गुरु-भगता है सोय ॥१४५॥

पलटू मैँ रोवन लगा, देखि जगत की रीति।
नजर छिपावै संत से, बिस्वा से है प्रीति ॥१४६॥

कमर बाँधि खोजन चले, पलटू फिरै उदेस[1]।
षट दरसन सब पचि मुए, कोऊ न कहा सँदेस ॥१४७॥

पलटू तेरे हाथ की, कर्री परी कमान।
जो खींचै सो गिरि परै, जोधा भीम समान ॥१४८॥

सिष्य सिष्य सबही कहै, सिष्य भया ना कोय।
पलटू गुरु की वस्तु को, सीखै सिष तब होय ॥१४९॥

ज्ञान ध्यान जानै नहीं, करते सिष्य बुलाय।
पलटू सिष्य चमार सम, गुरुवा मेस्तर[2] आय ॥१५०॥

इन्द्री जीति कारज करै, जगत सराहै भोग।
जैसे वर्षा सिखर पर, नहीं भींजबे जोग ॥१५१॥

पलटू हरि के कारने, हम तो भये फकीर।
हरि से पंजा लाय फिर, तीनोँ लोक जगीर ॥१५२॥

पलटू लेखे जक्त के, जोगिया गया खराब।
जोगिया जानै जग गया, दोनोँ देत जबाब ॥१५३॥

झाड़ नहीं फल खात है, नहीं कूप को प्यास।
परस्वारथ के कारने, जन्मे पलटूदास ॥१५४॥

---

(१) अवदेश या विदेश। (२) भंगी।

खोजत गठरी लाल की, नहीं गाँठि मैं दाम।
लोक लाज तोड़ै नहीं, पलटू चाहै राम ॥१५५॥

मरनेवाला मरि गया, रोवै सो मरि जाय।
समझावै सो भी मरै, पलटू को पछिताय ॥१५६॥

पलटू प्रेमी नाम के, सो तो उतरे पार।
कामी क्रोधी लालची, बूड़ि मुए मँझधार ॥१५७॥

सिंहन के लँहड़ा किन देखा, बसुधा भरमे एक।
ऐसे संत कोइ एक हैं, और रँगे सब भेष ॥१५८॥

नहिं हीरा बोरन चलै, सिंह न चलैं जमात।
ऐसे संत कोइ एक हैं, और माँग सब खात ॥१५९॥

पलटुदास के हाथ की, चोखी है तरवार।
जो छूए सो गिरि पड़ै, मूँठी मैं है धार ॥१६०॥

पलटू नर तन पाइकै, आवैगा केहि काम।
वहि मुख मैं कीड़ा परै, जो न भजै हरिनाम ॥१६१॥

पलटू जे कहै मरि मरौं, सो न आपने हाथ।
कहन सुनन मैं मन नहीं, रहनि लाज के साथ ॥१६२॥

मूआ है मरि जायगा, मुए के बाजी ढोल।
सुपन सनेही जग भया, सहदानी रहिगे बोल ॥१६३॥

पलटू जो कोइ देखै, तिस की सरना भाग।
उलटा कूप है गगन मैं, तिस मैं जरै चिराग ॥१६४॥

गाँसी छूटै सबद की, मूरख करै न ज्ञान।
पलटू सतगुरु क्या करैं, हिरदय भया पखान ॥१६५॥

॥ इति ॥

शुद्धि पत्र

पलटू साहिब भाग ३

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२२	२	निसु	दिन
,,	६	मूख नाहिँ रहौँ	भूखल नहिँ न रहौँ
७६	१३	गोँदि	गोनि
८८	२	वानिया	वनिया
६१	नोट	(५)	(१)
,,	,,	(१)	(२)
,,	,,	(२)	(३)
,,	,,	(३)	(४)
६७	नोट	स्ंसार	संसार
१०६	६	भखानैँ	बखानैँ
११३	७	वैन	पैन [=चोखो]

जीवन चरित्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	६	आज़ममढ़	आज़मगढ़

फ़िहरिस्त छपी हुई पुस्तकों की

पुस्तक		मूल्य
कबीर साहिब का साखी-संग्रह	...	।।।)
कबीर साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ तीसरा एडिशन	...	।।)
,, ,, ,, भाग २	...	।।)
,, ,, ,, भाग ३	...	।)
,, ,, ,, भाग ४	...	=)
,, ,, ज्ञान-गुदड़ी, रेख़्ते और झूलने	...	।)
,, ,, अखरावती दूसरा एडिशन	...	-)।।
धनी धरमदास जी की शब्दावली और जीवन-चरित्र	...	।=)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली मय जीवन-चरित्र भाग १	...	।।।)
,, ,, ,, भाग २, पद्मसागर ग्रंथ सहित	...	।।।)
,, ,, रत्न सागर मय जीवन-चरित्र	...	।।।=)
,, ,, घट रामायन दो भागों में, मय जीवन-चरित्र, भाग १	...	१)
,, ,, भाग २	...	१)
गुरु नानक साहिब की प्राण-संगली सटिप्पण, जीवन-चरित्र सहित भाग १	...	१)
,, ,, ,, ,, भाग २	...	१)
दादू दयाल की बानी, भाग १ [साखी] जीवन-चरित्र सहित	...	१-)
,, ,, भाग २ [शब्द]	...	।।।-)
सुंदर बिलास और सुंदरदास जी का जीवन-चरित्र	...	।।=)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलिया और जीवन-चरित्र [नया]	...	।।)
,, ,, भाग २—शब्द	...	।-)।।
,, ,, भाग २—रेख़्ते, झूलने, अरिल, कवित्त और सवैया [नया]	..	।।)
,, ,, भाग ३—रागों के शब्द या भजन और साखियाँ [नया]	...	।।)
जगजीवन साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १	...	।।-)
,, ,, ,, भाग २	...	।।-)
दूलन दास जी की बानी और जीवन-चरित्र	...	=)
चरनदासजी की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १	...	।।)।।
,, ,, भाग २	...	।=)।।
ग़रीबदास जी की बानी और जीवन-चरित्र	...	।।।=)
रैदासजी की बानी और जीवन-चरित्र	...	।-)।।

दरिया साहिब (बिहार वाले) का दरियासागर और जीवन-चरित्र ... ।~)
" " के चुने हुए पद और साखी ... ≶)॥
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी और जीवन-चरित्र ... ।)॥
भीखा साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र ... ... ।≡)
गुलाल साहिब (भीखा साहिब के गुरू) की बानी और जीवन-चरित्र ... ॥~)॥
बाबा मलूकदास जी की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ≡)
गुसाईं तुलसीदासजी की बारहमासी ... ...)॥
यारी साहिब की रत्नावली और जीवन-चरित्र ... ... ~)॥
बुल्ला साहिब का शब्दसार और जीवन-चरित्र ... ... ≈)॥
केशवदास जी की अमीघूँट और जीवन-चरित्र ... ... ~)
धरनीदास जी की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ।)
मीरा बाई की शब्दावली और जीवन-चरित्र (दूसरा एडिशन) ... ।~)॥
सहजो बाई का सहज-प्रकाश जीवन-चरित्र सहित (तीसरा एडिशन विशेष शब्दों के साथ) ... ।~)
दया बाई की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ≈)॥
संतबानी संग्रह, भाग १ [साखी] प्रत्येक महात्मा के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित ... १)
" " भाग २ [शब्द] ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित जिन की साखी भाग १ में नहीं दी हैं १)
अहिल्याबाई का जीवन-चरित्र अँग्रेज़ी पद्य में ... ... =)

दाम में डाक महसूल व वाल्यू-पेअबल कमिशन शामिल नहीं है वह इसके ऊपर लिया जायगा।

मनेजर, बेलवेडियर प्रेस,
इलाहाबाद।